अध्यक्षीय निवेदन

जैन संस्कृति के चलते-फिरते तीर्थ कहे जाने वाले सभी दिगम्बर जैन साधु-संतों को नमन करते हुए अपनी बात प्रारम्भ कर रहा हूँ। बरसात के दिनों में उत्पन्न अनंत सूक्ष्म जीव की हत्या न हो इस भाव से पैदल विहार कर रहे निर्ग्रन्थ मुनि-महाराज, साधु-साध्वी अपनी पद यात्रा को विराम देते हुए अपने वर्तमान स्थान पर चार माह व्यतीत करते हैं जिन्हें हम चातुर्मास भी कहते हैं। वर्तमान में लगभग सभी साधू-साध्वियों का चातुर्मास प्रारम्भ हो गया है और जगह-जगह कलश स्थापना हो रही है। जैसा कि विदित है भारत देश में कोरोना विषाणु एक भयानक संकट के रूप में उभरा है और वर्तमान में भी इसका संकट टला नहीं है। मैं समाज से निवेदन करता हूँ कि इस कोरोना विषाणु को नजर अंदाज न करते हुए एवं चातुर्मास कर रहे हमारे जैन शासन की शान मुनि-महाराजों, आर्यिका माताओं की रक्षा की जिम्मेदारी उठाते हुए सावधान व सतर्क रहें। चातुर्मास स्थल पर अधिक भीड़-भाड़ न करें एवं मास्क का उपयोग करें। आमजन के बचाव के लिए तो वैक्सीन है परन्तु हमारे मुनि-महाराज एवं साधु-साध्वी इसका उपयोग नहीं करते इस बात को ध्यान में रखते हुए सावधानी बरतना अति आवश्यक है।

बहुत ही ख़ुशी की बात है कि जैन परम्परा के उल्लेखनीय आचार्य श्री कुन्दकुन्द भगवान के जन्म स्थान कोनाकोंडला के रससिद्दलागुट्टा पहाड़ की ४२.७९ एकड़ की भूमि शीघ्र तीर्थक्षेत्र कमेटी को मिलेगी जिससे जर्जर अवस्था में पड़े महान आचार्य श्री कुंदकुंदजी के जन्मस्थान का विकास भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कर सके, ऐसी भावना के साथ निरंतर प्रयासरत तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इसके लिए सरकार को निरंतर निवेदन पत्र प्रेषित किये जिसके परिणाम स्वरूप **"भगवान के घर देर है, पर अंधेर नहीं"** कहावत सिद्ध होते हुए पुरातत्व विभाग के कमिश्नर ने दिनांक २७-०७-२०२१ को कोनकोंडला क्षेत्र के विकास के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को अनुमति प्रदान कर दी है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की आचार्य भगवन कुन्दकुन्द के जन्म स्थान (कर्नाटक राज्य, अनंतपुर जिला के कोनाकोंडला गांव के नाम से जाना जाता है) में पहाड़ पर दिगंबर जैन मंदिर, धर्मशाला व आचार्य कुंदकुंद स्मारक बनाने की योजना

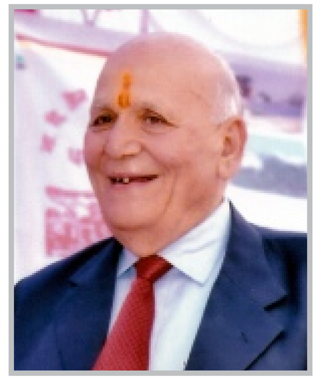

है जिसमें समस्त मुनि-महाराजों, आर्यिका माताओं, भट्टारकों का आशीर्वाद एवं सकल दिगम्बर जैन समाज के सहयोग की अति आवश्यकता है। अतः मैं समाज से आग्रह करता हूँ कि जिन्होंने प्रवचनसार, समयसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, बारस अणुवेक्खा, दसंण पाहुड़, चारित्तपाहुड़, बोध पाहुड़, रयणसार, सिद्धभक्ति और मूलाचार जैसे अनेक अमूल्य जैन ग्रंथ हमें प्रदान किये, जिनके माध्यम से हमने जीवन जीने की कला सीखी, जिन्होंने संसार सागर से मुक्ति सागर तक जाने की राह दिखलाई ऐसे हमारे जिनधर्म की शान आचार्य श्री कुन्दकुन्द भगवान के जन्मस्थान को हम सब मिलकर एक ऐसा रूप प्रदान करें जो सम्पूर्ण विश्व के लिए एक इतिहास बन जाए।

कर्नाटक राज्य में स्थित कोनाकोंडला के विकास के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी शीघ्र ही योजना बद्ध तरीके से कार्य को गति प्रदान करेगी और मुझे पूर्ण विश्वास है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी को इस परम-पावन कार्य के लिए आपका तन-मन-धन से सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

२३ वें तीर्थंकर पारसनाथ का जीवन तप-साधना में तल्लीन रहा उन्होंने जीवदया, अहिंसा का सन्देश जन-जन को दिया एवं केवलज्ञान प्राप्त कर परम-पावन भूमि शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी से श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को मोक्ष पद प्राप्त किया। भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक जिसे हम मोक्ष (मुकुट) सप्तमी के रूप में मनाते हैं। इस वर्ष का संयोग है कि यह शुभ दिन १५ अगस्त स्वंत्रता दिवस के दिन है। इस परम पावन दिन के अवसर पर मैं समस्त देश-वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रगट करता हूँ।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष ११ अंक ५ अगस्त २०२१

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

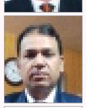
श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर

सम्पादक
उमानाथ दुबे

सम्पादकीय सलाहाकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

उपसर्ग और चुनौतियों का सामना करना सिखाता है तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जीवन	7
धार्मिक चेतना का जीवंत केन्द्र नैनागिरि	8
वात्सल्य की भावना का प्रतीक धार्मिक एवं सामाजिक पर्व रक्षाबंधन	10
प्रभु का स्पर्श हमें स्वर्ण नहीं, पारस बना देता है	12
जैन अल्पसंख्यक होने के लाभ: एक दृष्टि	13
आचार्य यतिवृषभ एवं उनकी तिलोयपण्णत्ती	14
तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड अंचल के वरिष्ठ पदाधिकारियों का तीर्थक्षेत्र भ्रमण	20
तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारियों का तीर्थ भ्रमण	22
सत्कर्म ही इंसान को भगवान बना देते हैं-आचार्य गुप्तिनंदी	33
पावापुरी-नालन्दा का पुरातत्त्व	35

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।

2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 फैक्स : 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com, Whatsapp No. : 7718859108

मूल्य

वार्षिक	300 रुपये
त्रिवार्षिक	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	2500 रुपये

एक कलश तीर्थों की रक्षा के लिए

हमारे तीर्थ ही अभी तक जैन संस्कृति को बचा कर रखे हैं और आगे भी बचाकर रखेंगे परन्तु यह हमारा दायित्व है कि आने वाली पीढ़ी तक हम इन तीर्थों को बचा कर रख सकें। आज हम तीर्थों एवं जैन संस्कृति के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं जिसका लाभ अन्य आम्नाय के लोग उठा रहे हैं इसी उदासीनता के कारण हमें आय दिन समाचार प्राप्त होते रहते हैं कि किसी जैन तीर्थ पर असामाजिक तत्वों द्वारा कब्जा करने का प्रयास या उत्पात होने लगा है। यही कारण है कि हम अपने तीर्थ अपने हाथों से गवां रहे है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एक शताधिक वर्ष प्राचीन संस्था है जिसका प्रमुख उद्देश्य भारत में स्थित सभी प्राचीन दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों/मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं संरक्षण-संवर्धन करना तथा तीर्थों पर असामाजिक तत्वों द्वारा उतपन्न कानूनी विवादों को क़ानूनी तरीके से लड़कर तीर्थ का बचाव करना है। और इन सब कार्यों में अत्याधिक मात्रा में तीर्थक्षेत्र कमेटी धन व्यय भी करती है।

मैं हमारे सभी मुनि-महाराजों एवं आर्यिका माताओं के चरणों में नमोस्तु/वंदामि पूर्वक नमन करते हुए हो रहे चातुर्मास के लिए मंगल कामना करता हूँ। हमारे जैन धर्म की शान कहे जाने वाले मुनि-महाराज एवं आर्यिका मातायें इन चार महीने एक ही स्थान पर विराजमान होकर तप-साधना करते/करती हैं और ये उस शहर, जनपद, कस्बा या गाँव का सौभाग्य होगा कि वहाँ पर मुनि-महाराजों एवं आर्यिका माताओं का अगले चार महीने तक सान्निध्य प्राप्त होने जा रहा है मैं उनके पुण्य की अनुमोदना करता हूँ।

जैन साधु-साध्वी के हो रहे चातुर्मास स्थान पर प्रतिवर्ष कलश स्थापना की जाती है अतः मैं समाज से निवेदन करता हूँ इस कलश स्थापना के साथ ही एक कलश भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से तीर्थक्षेत्रों की रक्षा के उद्देश्य से बनाई गयी योजना **तीर्थरक्षा कलश योजना** के नाम से स्थापित करें जिसकी राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई कार्यालय में भेजें, तीर्थक्षेत्र कमेटी के माध्यम से वह राशि तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण-संवर्धन में खर्च की जाएगी।

संतोष जैन पेंढ़ारी
राष्ट्रीय महामंत्री

परिचय

डॉ. अनुपम जैन

1983 से मध्यप्रदेश शासन की उच्च शिक्षा सेवा में कार्यरत डॉ. अनुपम जैन सम्प्रति इन्दौर जिले के शासकीय महाविद्यालय, सांवेर में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष-गणित के पद पर पदस्थ हैं साथ ही प्राचार्य के दायित्व का भी निर्वहन कर रहे हैं। पूर्व में शासकीय होलकर स्वशासी विज्ञान महाविद्यालय, इंदौर में विभिन्न पदों यथा प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, परीक्षा नियंत्रक, प्रभारी प्राचार्य के रूप में अपनी सेवायें दे चुके डॉ. जैन देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में 2013 एवं 2014 में प्रेस कन्ट्रोलर का भी दायित्व निभा चुके हैं। मेरठ विश्वविद्यालय (सम्प्रति चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय), मेरठ से M.Phil. (Maths 1980) के बाद आपने 'गणित के विकास में जैनाचार्यों का योगदान 'शीर्षक शोध प्रबन्ध पर 1992 में इसी विश्वविद्यालय से Ph.D. की उपाधि प्राप्त की है। आपके मार्गदर्शन में अब तक 12 शोध छात्रों ने Ph.D. (Mathematics) की उपाधि प्राप्त की है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ एवं गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ के इन्दौर केन्द्र से Ph.D. करने वाले दो दर्जन से अधिक शोध छात्रों को भी आपका परोक्ष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। वर्तमान में भी 2 छात्र Ph.D. हेतु कार्यरत हैं।

जापान, हांगकांग, नेपाल एवं यू.के. की अकादमिक यात्राएं कर चुके डॉ. जैन अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग हैं तथा The Research Promoting & Communication Society के अध्यक्ष, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ के कार्याध्यक्ष, गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ के निदेशक, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ-इन्दौर के निदेशक तथा ऋषभदेव गौरव न्यास-इन्दौर के संस्थापक एवं मंत्री हैं। आप भारतीय गणित इतिहास परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष है।

21 पुस्तकों, 165 शोधालेखों एवं 176 सामान्य अभिरुचि के लेखों के लेखक डॉ. जैन सम्प्रति जैन तीर्थ वन्दना (मासिक) के प्रधान सम्पादक, अर्हत् वचन (त्रैमासिक) के सम्पादक, Indian Research Communication (Half Yearly) के Executive Editor एवं दिगम्बर जैन महासमिति पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सदस्य हैं। आप सन्मति वाणी, युवा परिषद बुलेटिन, परिणय प्रतीक एवं सराक सोपान के परामर्श सम्पादक का दायित्व भी निभा रहे हैं। अनेक पुस्तकों तथा 50 से अधिक स्मारिकाओं, अभिनन्दन एवं स्मृति ग्रंथों का भी सम्पादन कर चुके हैं। 31 मार्च 2018 तक 1,83,376 पांडुलिपियों का सर्वेक्षण कर उनका कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर में कैटलाग तैयार करने हेतु आपको गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस् द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका हैं।

जैन गणित के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध हेतु आप प्रथम गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार (1995), जैन राष्ट्र गौरव अलंकरण (2002), उपाध्याय ज्ञानसागर स्वर्ण जयंती पुरस्कार (2008), रइधू पुरस्कार (2008), आचार्य नेमिचन्द्र पुरस्कार (2010), वागीश्वरी सम्मान (2011), जैन आगम मनीषा सम्मान (2012), JITO गौरव सम्मान (2015), सम्मानित किये जा चुके हैं। 2015 में पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागरजी के सान्निध्य में उत्तरप्रदेश के महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा आपको गणिताचार्य उपाधि से विभूषित किया गया। आपको 2018 में आर्यिका रत्नमती पुरस्कार, 2020 में USA का प्रतिष्ठित व Jewel of Jain World तथा 2021 में स्वस्तिश्री सम्मान (जहाजपुर) से भी सम्मानित किया गया है।

संपर्क : **डॉ. अनुपम जैन,**
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

चातुर्मास: जैन समाज हेतु स्वर्णिम माह

परम्परागत रूप से वर्षायोग (चातुर्मास) की अवधि जैन समाज के लिए उस वर्ष की स्वर्णिम अवधि होती है। एक ओर जहां श्रमण (मुनि, आर्यिका) आत्म कल्याण हेतु साधनारत रहते हैं वहीं समाज कल्याण एवं तीर्थ विकास की प्रशस्त प्रेरणा दे पाते है। श्रावक (श्रावक-श्राविकाएँ) भी विवाहादि मांगलिक कार्यों के मुहूर्त न होने तथा यातायात के साधनों की अल्पता के कारण आवागमन के बाधित रहने से थोड़ा फ्री रहते हैं। पहले ज्यादातर श्रावक सराफे, कपड़े या साहूकारी का काम करते थे फलतः फुरसत रहती थी किन्तु आज स्थितियाँ काफी बदल चुकी हैं। महानगरों की जैन समाज तो नौकरी एवं व्यापार के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका रखती है किन्तु ग्रामीण अंचल में अभी भी न्यूनाधिक पूर्ववत् स्थिति ही है।

भले ही शहरों में स्थिति बदल गई है किन्तु बुजुर्गों एवं 50 से ज्यादा उम्र वालों की आदतें नहीं बदली। वे अभी भी त्यागमय जीवन हेतु चातुर्मास का ही इन्तजार करते हैं। भाद्रपद माह तो जन-जन में एक नया उत्साह भर देता है। मन्दिरों में भीड़ बढ़ जाती है दशलक्षण पर्व में तो बड़ा से बड़ा मन्दिर भी छोटा पड़ जाता है। अनन्त चतुर्दशी एवं क्षमावाणी पर्व के दिनों में जैन बहुल क्षेत्रों का दृश्य मन को पुलकित कर देता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई अंचलों में तो पर्यूषण पर्व के उपरान्त उछाह (उल्लास) या धारा (अभिषेक) के नाम से मन्दिरों के वार्षिकोत्सव बहुत उल्लास से मनाये जाते हैं किन्तु क्या हम अपनी परम्पराओं को लम्बे समय तक जीवित रखने हेतु ठीक से तैयारी कर रहे हैं? शायद नहीं।

तीर्थ हमारी संस्कृति के केन्द्र हैं। परम्परागत रूप से अनेक जैन परिवार पर्यूषण पर्व के बाद तीर्थ यात्रा पर जाते हैं। तीर्थों के बारे में सम्यक् अद्यतन जानकारी देने वाली एक दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका निकली है जो बहुत उपयोगी है। इसे श्री हसमुख जैन गाँधी (93021 03513), इन्दौर से प्राप्त किया जा सकता है अन्य भी कुछ डाइरेक्टरी उपलब्ध है। पुनः

1. तीर्थक्षेत्र की वन्दना करने जाने वाले परिवारों से मेरा आग्रह है कि आप दान तो करते ही हैं किन्तु अब मुद्रा के अवमूल्यन के कारण तीर्थों के खर्च भी बढ़े हैं अतः यथाशक्ति अधिकतम दान करें। अब 20 या 50 रुपये का मूल्य बहुत घट गया है।

2. आप अपने प्रतिष्ठान के उत्पाद तीर्थ को आवश्यकतानुसार निःशुल्क या बिना मुनाफे के उपलब्ध करावें अर्थात् तीर्थ को आवश्यकता होने पर प्रदान करे।

3. यदि आप सामाजिक कार्यकर्ता हैं धार्मिक/सांस्कृतिक आयोजनों में रुचि रखते हैं तो ऐसे आयोजन क्षेत्र पर या समाज में करें किन्तु उसमें धार्मिकता, शालीनता स्पष्टतः झलकनी चाहिए।

4. सबसे अन्त में किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप जिस तीर्थ पर जा रहे हैं वहाँ की परम्पराओं का सम्मान करें। वहाँ की पूजन पद्धति, प्राचीनता एवं पुरातत्व से छेड़-छाड न करें एवं न दूसरों को ऐसा करने की अनुमति देवें। तीर्थों के असली मालिक तो उसे पूजने वाले हैं। तीर्थों की रक्षा भक्तों को ही करनी है ट्रस्टी तो आपकी भावनाओं को अमली जामा पहनाने वाले हैं। उनके पास प्रबन्धन की जिम्मेदारी है। पुनः क्षेत्रों के प्रबन्धकों से अनुरोध है कि

1. आप तीर्थ की प्राचीनता एवं पुरातत्व की रक्षा करे।

2. आज का जैन युवा 6 दिन काम करने के बाद सातवें दिन शांति की तलाश में तीर्थों की ओर भागता है उसे सुविधायें प्रदान करे। आपके यहाँ यात्रियों का आवागमन बढेगा।

3. आज का युवा आर्थिक दृष्टि से पूर्व की अपेक्षा अधिक सम्पन्न है। वह तीर्थ पर शांति एवं दैनिक चर्या से हटकर कुछ आराम के लिये सपरिवार आता है अतः यदि आप साधन सुविधाएँ बढ़ायेंगे तो प्रगति के द्वार खुलेंगे। श्री तिजारा जी एवं श्री महावीर जी में अतिशय तो है ही किन्तु सुविधाओं पर ध्यान देना एवं कुशल प्रबन्धन भी महत्त्वपूर्ण है।

पारदर्शिता, कम्प्यूटराइज्ड आवास बुकिंग व्यवस्था, भोजन की सुंदर व्यवस्था एवं कर्मचारियों का विनम्र व्यवहार भी क्षेत्र की प्रगति में सहायक है।

अगला अंक आपके हाथों में पर्यूषण के बाद आ सकेगा। अतः इस बार का पर्यूषण आपके जीवन में यादगार बने, आप संयमित जीवन शैली, जो जैन जीवन शैली ही है, को अपनाकर स्वयं एवं अपने परिवार को कोविड-१९ से सुरक्षित रख सके इसी मंगल भावना के साथ।

आपके रचनात्मक सुझाव एवं लेख सादर आमंत्रित हैं।

डॉ. अनुपम जैन, ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,
इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस मोक्ष सप्तमी १५ अगस्त पर विशेष आलेख

उपसर्ग और चुनौतियों का सामना करना सिखाता है तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जीवन

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

जैनधर्म के लोकप्रिय २३वें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ की निर्वाण तिथि श्रावण शुक्ल सप्तमी को मुकुट सप्तमी मोक्ष सप्तमी के रूप में वृहद् स्तर पर मनाए जाने की परंपरा है। इस दिन जैन मंदिरों में जहां विशेष अभिषेक, पूजा-अर्चना, शांतिधारा और पार्श्वनाथ भगवान का निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है वहीं व्रत-उपवास खासतौर से महिलाएं, युवतियां रखती हैं। अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक आयोजन होते हैं। व्रतों के उद्यापन भी किये जाते हैं। चिंतामणी, विघ्नहर्ता, संकटमोचक आदि के रूप में भी इनकी खूब प्रसिद्धि है। जैनधर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म बनारस के राजा अश्वसेन और रानी वामादेवी के यहां पौष कृष्ण एकादशी के दिन हुआ था। जैन परंपरा में वर्तमान में तीर्थंकर पार्श्वनाथ बहुत ही लोकप्रिय और श्रद्धालुओं की आस्था के प्रमुख केन्द्रबिन्दु हैं, उन्होंने पौष कृष्ण की ११वीं तिथि को दीक्षा ली और श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सम्मेदशिखरजी पर्वत पर मोक्ष प्राप्त कर लिया। वर्तमान में सम्मेदशिखरजी झारखंड प्रांत में स्थित है। यह स्थान जैन समुदाय का सबसे प्रमुख तीर्थस्थान है। जिस पर्वत पर पार्श्वनाथ को निर्वाण प्राप्त हुआ वह पारसनाथ पर्वत के नाम से जाना जाता है। लाखों श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आते हैं।

हर व्यक्ति उत्कर्ष तो चाहता है पर उपसर्ग, कष्ट, संघर्ष से बचना चाहता है पर बिना उपसर्ग के, बिना संघर्ष, बिना चैलेंज के जीवन में उत्कर्ष संभव नहीं। जो उपसर्ग और चुनौतियों को समता से जीवन में सहन करता है वह भगवान भी बन जाता है। ऐसे ही मरुभुति के जीव ने दस भव तक अपने सगे भाई कमठ का उपसर्ग सहन किया, वह मरुभुति आगे जाकर तीर्थंकर पार्श्वनाथ बन गए।

कभी सर्प, अजगर, भील , सिंह आदि बनकर कमठ ने पार्श्वनाथ के जीव को प्रताड़ित किया पर उन्होंने समता का परिचय दिया और वे भगवान बन गए। जैसे-जैसे उपसर्ग बढ़ता गया पार्श्वनाथ के जीव का उत्कर्ष होता गया। अंतिम पर्याय में तापसी बनकर कमठ ने अहिच्छेत्र में घोर उपर्सग किया पर पार्श्वनाथ ने दिगम्बर भेष धारण किया था और समता पूर्ण भावों से उपसर्ग सहन किया और अपना उत्कर्ष किया। वह श्रावण शुक्ल सप्तमी का दिन था जब तीर्थकर पार्श्वनाथ ने मोक्ष प्राप्त किया। इसलिए जैन परंपरा में मुकुट सप्तमी यानि मोक्ष सप्तमी श्रद्धा-आस्था के साथ मनाई जाती है।

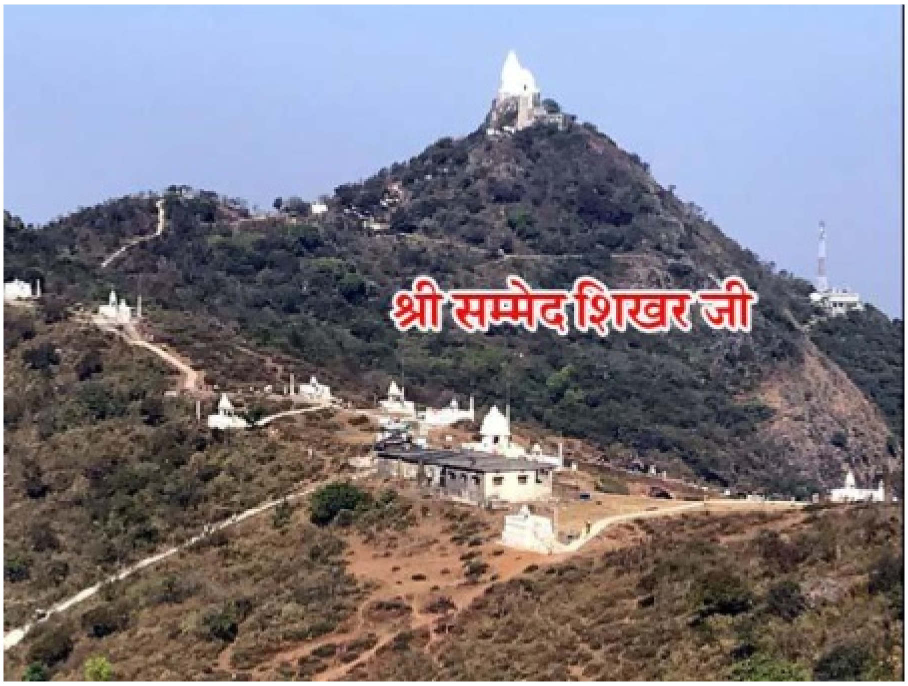

भगवान पार्श्वनाथ का अतीत संघर्षमय रहा है। दस भव तक निरंतर जीवन का घात होने पर भी कभी क्षोभ नहीं किया, न अन्य को दोषी ठहराया, धैर्य पूर्वक सहन किया, तभी संसार के बंधनों से मुक्त हुए। पार्श्वनाथ भगवान के पदचिन्हों पर चलकर हम सभी भी अपना जीवन कल्याण कर सकें।

तीर्थकर पार्श्वनाथ क्षमा के प्रतीक हैं। उन्होंने व्यावहारिक तप पर जोर दिया। उन्होंने अपने उपदेशों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह पर अधिक बल दिया। उनके सिद्धांत

व्यावहारिक थे, इसलिए उनके व्यक्तित्व और उपदेशों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और उड़ीसा में फैले हुए लाखों सराकों, बंगाल के मेदिनीपुर जिले के सदगोवा ओर उडीसा के रंगिया जाति के लोग पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानते हैं। पार्श्वनाथ के सिद्धांत और संस्कार इनके जीवन में गहरी जड़े जमा चुके हैं। इसके अलावा सम्मेदशिखर के निकट रहने वाली भील जाति पार्श्वनाथ की अनन्य भक्त है।

भगवान पार्श्वनाथ की जीवन-घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति, समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं। इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथापूर्व है। हिंसा और अहिंसा का द्वन्द भी हमें इन घटनाओं में अभिगुम्फित दिखाई देता है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लम्बे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया। उनका धर्म व्यवहार की दृष्टि से सहज था, जिसमें जीवन शैली का प्रतिपादन था।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भक्ति में अनेक स्तोत्र का आचार्यो ने सृजन किया है, जैसे- श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र, कल्याण मंदिर स्तोत्र, इन्द्रनंदि कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र, राजसेनकृत पार्श्वनाथाष्टक, पद्मप्रभमलधारीदेव कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र, विद्यानंदिकृत पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि। स्तोत्र रचना आराध्यदेव के प्रति बहुमान प्रदर्शन एवं आराध्य के अतिशय का प्रतिफल है। अतः इन स्तोत्रों की बहुलता भगवान पार्श्वनाथ की अतिशय प्रभावकता का सूचक है। भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारा श्रमण परम्परा में भगवान पार्श्वनाथ का ऐतिहासिक एवं गौरवशाली महत्व रहा है। भगवान पार्श्वनाथ हमारी अविच्छिन्न तीर्थंकर परम्परा के दिव्य आभावान योगी ऐतिहासिक पुरुष हैं। सर्वप्रथम डॉ. हर्मन याकोबी ने 'स्टडीज इन जैनिज्म' के माध्यम से उन्हें ऐतिहासिक पुरुष माना। तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने मालव, अवंती, गौर्जर, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, अंग-नल, कलिंग, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, द्रविड, कश्मीर, मगध, कच्छ, विदर्भ, पंचाल, पल्लव आदि आर्यखंड के देशों/जनपदों में विहार किया। उनकी ध्यानयोग की साधना वास्तव में आत्मसाधना थी। भय, प्रलोभन, राग-द्वेष से परे। उनका कहना था कि सताने वाले के प्रति भी सहज करुणा और कल्याण की भावना रखें। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रतिमाएं और मंदिर हैं। उनके जन्म स्थान भेलूपुर वाराणसी में बहुत ही भव्य और विशाल दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। यह स्थान विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है।

धार्मिक चेतना का जीवंत केन्द्र नैनागिरि

- डॉ. वीनू विकास सिंघई,

भगवान नेमिनाथ के समवशरण में विराजमान रहे आचार्य वरदत्त और उनके साथी चार मुनिवर चालीस हजार वर्ष पूर्व नैनागिरि पधारे। उनके प्रवचनों से नैनागिरि में धार्मिक चेतना का उदय हुआ। गहन वरदत्त वन के केन्द्र में स्थित सिद्ध शिला से पांचों मुनिवर मोक्ष पधारे। आचार्य वरदत्तादि पंच सिद्धों से प्रभावी प्रेरणा लेकर भगवान पार्श्वनाथ ने नैनागिरि में अपना समवसरण आयोजित किया। इससे नैनागिरि में धार्मिक चेतना का समुन्नयन हुआ। देश के अनेक संतों ने नैनागिरि पधारकर नैनागिरि की धर्मचेतना का अभिवर्द्धन किया। संवर्द्धन किया। विभिन्न पुराणों, निर्वाण काण्ड, यात्रा विवरणों और धार्मिक पुस्तकों में प्रथम शताब्दि से लगातार प्रकाशित नैनागिरि माहात्म्य ने नैनागिरि दर्शन के लिए पूरे राष्ट्र के जन-जन को आकर्षित एवं प्रेरित किया।

२. पुरातन और आधुनिक महर्षियों को नैनागिरि में प्राप्त सहस्त्रों उपलब्धियां हमें नैनागिरि दर्शन के लिए आमंत्रित करती हैं। गत शताब्दि में नैनागिरि में दीक्षित मुनिवरों और आर्यिकाओं ने हमारे देश में ही नही अपितु पूरे विश्व में धार्मिक चेतना का जागरण किया है। सद्प्रवृतियों का प्रचार/प्रसार किया है।

३. नैनागिरि में उपलब्ध देवदर्शन और पर्यटन जैसे सामान्य लाभों से ऊपर उठकर अनेक प्रत्यक्ष और परोक्ष लाभ प्राप्त होते हैं। नैनागिरि की यात्रा हमारी सोच, हमारी चिंतन-धारा, हमारी चेतना, हमारी भावना तथा हमारी व्यावहारिक प्रक्रियाओं को व्यापक रूप से प्रभावित करती है। नैनागिरि की यात्रा हमें सत्कर्म करने के लिए शिक्षित, प्रशिक्षित और प्रेरित करती है। हमारे मन को ऊर्जा और तन को स्फूर्ति प्रदान करती है। यात्रीगण नैनागिरि के दर्शन करते समय वरदत्तादि सिद्ध पुरूषों से दिव्य प्रेरणाऐं प्राप्त कर यात्रीगण अपनी वर्तमान समस्याओं का समाधान प्राप्त करते हैं। भविष्य के लिए उपयोगी प्रोत्साहन और मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। महावीर

सरोवर में स्नानकर अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत करते है। शारीरिक शुद्धता और भावनात्मक श्रेष्ठता प्राप्त करते हैं। अपने चिंतन में उत्कृष्टता और अपने चारित्र में आदर्शवादिता का समावेश करते हैं। अपना चतुर्मुखी विकास करने के लिए संकल्पित होते हैं। बड़े-बड़े चिकित्सालयों की गहन चिकित्सा इकाईयों में रहकर प्राप्त उच्चस्तरीय एवं सुव्यवस्थित चिकित्सा की भांति नैनागिरि में कुछ दिन रहकर दर्शक और साधक साधना, स्वाध्याय और सत्संग से मिश्रित आध्यात्मिकता के असाधारण लाभ प्राप्त करते हैं। नैनागिरि की यात्रा से लौटकर आध्यात्मिक कायाकल्प जैसे लाभों का अनुपम अनुभव प्राप्त करते हैं।

४. आचार्य नेमिचन्द्र द्वारा एक हजार वर्ष पूर्व श्रवणबेलगोल में लिखित गोम्मटसार का वर्ष १९०२ में बाबा दौलतराम वर्णी ने हिन्दी में पद्यानुवाद कर

"छंदोदय" विरचित किया। छंदोदय पूर्ण होने के कुछ दिन पूर्व पाठशाला की स्थापना की। मुनिवर आदिसागर ने नैनागिरि में वर्ष १९५३ में भगवान

वात्सल्य की भावना का प्रतीक धार्मिक एवं सामाजिक पर्व रक्षाबंधन

- प्राचार्य (डॉ.) नरेन्द्रकुमार जैन, सनावद

जैन समाज में रक्षाबंधन पर्व वात्सल्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। भगवान्अरनाथ स्वामी के तीर्थ में महामुनिश्री विष्णुकुमार के निमित्त से इस पर्व की शुरुआत हुई। श्रावण शुक्ल प्रतिपदा के दिन महामुनि विष्णुकुमार ने विक्रिया ऋद्धि का उपयोग करते हुए श्री अकम्पनाचार्य सहित ७०० मुनियों के उपसर्ग का निवारण हस्तिनापुर में किया था। अत: जैनधर्मानुयायी इस श्रावण शुक्ल प्रतिपदा के दिन को वात्सल्य पूर्णिमा या वात्सल्य पर्व के रूप में प्रतिवर्ष मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का निर्वाण दिवस भी है।

जैन धर्मानुयायियों के साथ-साथ विविध धार्मिक और सांस्कृतिक प्रसंगों से भी रक्षाबंधन का दिन पवित्र माना जाता है। वेदों की उत्पत्ति (जन्म) का दिन होने के कारण यह दिवस संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। मौजी बंधन के रूप में इस दिन ब्राह्मण यज्ञोपवीत धारण करते हैं। इस दिन लवकुश का जन्म हुआ था। श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की रक्षा की थी। दानवों को हराने के लिए इन्द्राणी ने इन्द्र को राखी (रक्षा सूत्र) बाँधकर विजय की कामना की थी। इस तरह रक्षाबंधन पर्व का इस देश में व्यापक महत्व है। यह पर्व भाई-बहिन के स्नेह के प्रतीक पर्व के रूप में सम्पूर्ण देश में मनाया जाता है।

जैन पौराणिक कथा प्रसंग के अनुसार अवन्तिदेश की उज्जयिनी नगरी में राजा श्रीवर्मा एवं रानी श्रीमती का राज्य था। राजा श्रीवर्मा के चार मंत्री थे- बलि, वृहस्पति, प्रह्लाद और नमुचि। ये मंत्री जैनधर्म एवं जैनमुनि के तीव्र विरोधी थे। एक बार पग विहार कर **अकम्पनाचार्य** सहित ७०० मुनि उज्जयिनी आये, तब आचार्य श्री ने इन मंत्रियों की मुनि विरोधी प्रवृत्ति जानकर संघस्थ साधुओं से मौन धारण किये रहने का आदेश दिया। इस आदेश से संघ के एक मुनि अनभिज्ञ थे जिनका नाम **मुनि श्री श्रुतसागरजी** था। अत: उन्होंने मंत्रियों से शास्त्रार्थ कर उन्हें हरा दिया और आचार्य श्री को यह घटना बता दी। आचार्य अकम्पन ने आने वाली परिस्थिति को जानकर मुनि श्रुतसागर को शास्त्रार्थ के स्थान पर जाकर मौन धारण कर स्थित रहने का आदेश दिया। आज्ञा का पालन करते हुए मुनि श्रुतसागर जी जब उस स्थान पर ध्यानस्थ थे तभी रात्रि में उपरोक्त चारों मंत्रियों ने मुनि पर हमला कर दिया। मुनि पर उपसर्ग देख नगर देवी द्वारा उन्हें कीलित कर दिया। प्रात: नगरवासियों ने जब मुनि विरोधी मंत्रियों की यह स्थिति देखी और राजा को पता चला तब राजा ने उन मंत्रियों को गधे पर बिठाकर देश निकाला दिया। कुछ दिनों पश्चात चारों मंत्री यहाँ वहाँ घूमते रहे। तत्पश्चात हस्तिनापुर नगर आये। यहाँ का राजा पद्मरथ था; जिनका प्रबल विरोधी शक्तिशाली सिंहबल था। अत: राजा ने घोषणा की कि जो व्यक्ति या समूह कुम्भपुर के राजा सिंहबल को पराजित उनके समक्ष लायेगा, उसे सात दिन का राज्य दिया जायेगा। चारों मंत्रियों ने छल से सिंहबल को पकड़कर राजा को सौंप दिया। राजा ने उन्हें वर देने की इच्छा प्रकट की, किन्तु चारों ने समय आने पर वर माँगने का कहकर वर को धरोहर के रूप में उनके पास रख दिया।

इसी बीच अकम्पनाचार्य आदि ७०० मुनियों का हस्तिनापुर आगमन हुआ। उन्हें देख मंत्रियों को अपने भविष्य की चिंता हुई। अत: उन्होंने राजा से सात दिन का राज माँग लिया। राज्य प्राप्ति के बाद उन मंत्रियों ने जहाँ अकम्पनाचार्य आदि विराजमान थे वहाँ पर (आतापन गिरि) यज्ञ करना प्रारंभ कर दिया जिससे मुनि संघ पर उपसर्ग होने लगा। अत: संघ भी उपसर्ग निवारण तक आहारादि का त्यागकर तप साधना में लीन हो गया। मिथिलानगरी में श्रवण नक्षत्र का कांपना देखकर क्षुल्लक पुष्पदंत द्वारा उपसर्ग निवारण की जानकारी लेकर धरणीभूषण पर्वत पर विराजमान मुनि श्री विष्णुकुमार को विक्रिया ऋद्धि की जानकारी देने पर मुनि विष्णुकुमार उपसर्ग निवारणार्थ तैयार हो गये। मुनि विष्णुकुमार ने वामन का रूप धारण कर यज्ञभूमि में पहुँचकर यज्ञ आयोज बलि से तीन पग पृथ्वी की माँग की। बलि द्वारा स्वीकृति दिये जाने पर मुनि विष्णुकुमार ने विक्रियाऋद्धि के बल पर वृहदाकार बनकर प्रथम पग (पैर) मेरुपर्वत, द्वितीय पग मानुषोत्तर पर्वत पर रखकर सम्पूर्ण पृथ्वी को नाप लिया। तीसरा पैर रखने को जगह नहीं मिली अत: उन्होंने तीसरा पग बलि की पीठ पर रखा तथा बलि द्वारा क्षमायाचना करने पर अपना पग समेटकर क्षमा कर दिया। मुनि संघ का उपसर्ग दूर हुआ। अत: आचार्य सहित संघ साधु आहार चर्या पर निकले, जिन्हें सीमियों (सिमइयों) का आहार दिया गया। मुनि संघ के उपसर्ग निवारण के उपलक्ष्य में सभी ने रक्षासूत्रों को आपस में बाँधकर देव, शास्त्र, गुरुओं की रक्षा का संकल्प लिया। तभी से रक्षा सूत्र बाँधने की परम्परा प्रारंभ हुई।

रक्षा सूत्र की भी अपनी विशेषता है। यह रक्षासूत्र सात, पाँच, तीन एक धागे से बना होता है। ये सभी सूत्र त्याग की भावना पर बल देते हैं।

धागे के सात सूत्र- सात युगों की याद दिलाते हुए, सप्त स्थानों की प्राप्ति हेतु संकल्पित होकर सप्त व्यसनों के त्याग की प्रेरणा देते हैं।

धागे के पाँच सूत्र- पाँचों पापों (हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह) त्याग के प्रतीक हैं।

धागे के तीन सूत्र- रत्नत्रय के पालन के प्रतीक तथा जैनत्व के प्रतीक देवदर्शन, रात्रि भोजन त्याग तथा छानकर पानी पीने को प्रेरित करने वाले हैं।

धागे का एक सूत्र- आत्मा के चिंतन का प्रतीक है।

इन रक्षा सूत्रों का धार्मिक जीवन में तो महत्व है ही; साथ ही समाज

में भी इसकी उपयोगिता सिद्ध हुई है। वैदिक परम्परा में देवासुर संग्राम में इन्द्राणी द्वारा इन्द्र को राखी बाँधकर विजय की कामना से भेजने इसकी प्राचीनता, महत्ता को दर्शाता है। मुगल शासक हुमायूं ने राणा सांगा की विधवा द्वारा रक्षा सूत्र भेजने पर उसकी रक्षा का प्रयत्न करना तथा सिकंदर से पुरु की रक्षा हेतु रानी द्वारा राखी का बाँधा जाना यह दर्शाता है कि रक्षासूत्र (राखी) का लोगों के दिलों में आत्मीयता का संबंध है। लोग राखी के सम्मान के लिए कृत संकल्पित रहते हैं। भाई इस पर्व को खुशी के साथ रक्षा और त्याग की भावना के साथ मनाते हैं। इस पर्व से हमें यह शिक्षा लेनी चाहिए--

१. किसी को भी वर देना घातक है। राजा पद्मरथ, राजा दशरथ इसके उदाहरण हैं।

२. राजाओं को मंत्री सोच समझकर बनाना चाहिए। ताकि देश एवं समाज का भला हो और राष्ट्रहित व्यक्तिगत हितों की बलि न चढ़ जाये।

रक्षा बंधन के दिन हम विभिन्न रूपों में रक्षा सूत्र बाँधते हैं। कई स्थान पर मन्दिरों में व्यक्ति रक्षा सूत्र बाँधकर देव, शास्त्र, गुरु के संरक्षण के प्रति संकल्प भाव व्यक्त करते हैं। कई स्थानों पर मन्दिरों की राखी बंधती है। इसमें जिसके अंदर व्यक्ति जिन मन्दिरों में जाकर देव दर्शन कर रक्षासूत्र बाँधते हैं कि देव, शास्त्र, गुरु की आराधना, पूजा से हमारा जीवन धर्ममय बनकर सुखमय व्यतीत होगा। इसी के साथ रत्नत्रय के पालन, देवदर्शन, रात्रि भोजन त्याग तथा पानी छानकर पीने का संकल्प लेते हैं। रक्षाबंधन पर्व पर हम सभी अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हों इसके लिए देव, शास्त्र, मन्दिर (जिनायतन), गुरुओं की रक्षा तथा परिवार, समाज और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए कृत संकल्पित हों।

सच्चे देव की रक्षा- आज का युग ऐसा है जिसमें अंधश्रद्धा, भक्ति व कई कल्पित भगवान्, देव उत्पन्न हो गये हैं। वीतरागी देव ही सच्चे देव हैं जो अठारह दोषों से रहित हैं। जिनकी प्रतिष्ठित मूर्तियां जिनमन्दिरों/चैत्यालयों में विराजमान हैं। उनका संरक्षण करें। उनकी अभिषेक, पूजा, भक्ति, आराधना होती रहे; इस हेतु रक्षाबंधन पर अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहने का संकल्प लें।

मुनियों (गुरुओं) की रक्षा- वर्तमान में भावलिङ्गी मुनियों को लेकर कई व्यक्ति मुनियों को नहीं मानते; जबकि यह सत्य है कि जब भी मोक्ष मिलेगा, दिगम्बर मुनिमुद्रा में जिनधर्म का पालन करने पर ही मिलेगा। अत: मुनिधर्म की रक्षा हेतु विशेष सजग रहें, इसके लिए आवश्यक है-

१. वीतरागी दिगम्बर मुनियों के प्रति सच्ची श्रद्धा रखें, विनम्र भाव प्रत्येक स्थिति में रखे।

२. पीछी, कमण्डलु और शास्त्र के अतिरिक्त मुनि के पास **कुछ न हो** इसका ध्यान रखें।

राजा के अविवेक पूर्ण निर्णय से संकट उत्पन्न होता है। अत: राजा को सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए। मुनियों के लिए आहारदान दें, द्रव्य दान न दें। मुनियों के पास बाह्य परिग्रह न हो; इसका विशेष ध्यान रखें।

शास्त्रों की रक्षा- **१.** मन्दिरों, घरों में रखी गई जिनवाणी तथा आगमिक शास्त्रों को सुरक्षित रखने हेतु उन पर वेष्टन लगायें। २. व्याख्यानों, प्रवचनों में जैनधर्म में वर्णित कथा प्रसंगों का उल्लेख करें। ३. एकान्तवादी विचारधारा से बचें और अनेकान्तवाद को स्वीकारें। ४. कल्पित साहित्य को महत्त्व न दें। ५. आगमिक ग्रंथों का नियमित स्वाध्याय करें। ६. शास्त्रों को घर-घर तक पहुँचायें, ताकि जिनवाणी का प्रचार-प्रसार करें।

मन्दिरों, तीर्थों की रक्षा- मन्दिरों एवं उपेक्षित तीर्थों का संरक्षण करें। मन्दिरों के जीर्णोद्धार हेतु दिल खोलकर दान दें। मन्दिरों में पूजा व्यवस्था हेतु भले ही पुजारी रखें परन्तु स्वयं भी पूजन करें। जहाँ मन्दिर न हो तथा श्रावक (जैन) हों वहाँ नवीन मन्दिर बनवाकर धर्म प्रभावना को बढ़ावा दें। मन्दिरों में आगम विरुद्ध कार्य न करें।

समाज के प्रति कर्तव्य- रक्षा बंधनकर वृद्ध लोगों, माता-पिता की रक्षा हेतु संकल्पित हों। माता, पिता, दादा, दादी को वृद्धाश्रम में भेजकर हँसी के पात्र बनने से बचें।

बहिनों से वचन लें कि जैनेतर समाज में शादी नहीं करेंगी। अपने ही साधर्मी से विवाह करेंगी। माता-पिता के सम्मान का ध्यान रखेंगी। परिवार के प्रति सामाजिक दायित्वों का सम्यक निर्वहन करेंगी। वात्सल्य भाव से मिल जुलकर रहेंगे तथा संयुक्त परिवार में सामंजस्य बैठाकर कार्य करेंगे।

सामाजिक दायित्वों का धर्म के परिप्रेक्ष्य में सम्यक् पालन करेंगे। आचार्य समन्तभद्र स्वामी रत्नकरण्ड श्रावकाचार में लिखते हैं-

स्वयूथ्यानप्रति सद्भाव सनाथापेतकेतवा।
प्रतिपत्तिर्यथायोग्यं वात्सल्यमभिलप्यते।।

अर्थात्सहधर्मी मनुष्यों के साथ अच्छे भावों से कपट रहित योग्यता के अनुसार आदर, सत्कार करना वात्सल्य है।

वात्सल्य भाव, प्रेम, स्नेह, सदाचार और सद्भावना का प्रतीक है। रक्षाबंधन पर्व में ये सभी भाव समाहित हैं अत: जैन श्रद्धालु इस पर्व को वात्सल्य दिवस (पर्व) के रूप में मनाते हैं। रक्षाबंधन पर्व के महत्व को पूज्य आर्यिकारत्न स्वस्तिभूषणमती माता जी ने स्वरचित पूजन में इसप्रकार उद्घाटित किया है-

गुरुवर अकंपन, सात-शतमुनि ध्यान में जब लीन थे,
उपसर्ग कीना आप पर, वे तो आतम लीन थे।।
विष्णु मुनि वात्सल्यवश उपसर्ग कीना दूर है,
आदर्श सेवा भाव जग में, तब हुआ मशहूर है।।
प्रारंभ पर्व सलूनो तब से जग में ख्याति पाई है,
हम भाव से पूजा करें, सेवा की ज्योति जगाई है।।

भाई-बहिन के पवित्र प्रेम के संबंध में किसी कवि ने यह भावना व्यक्त की कि-

भाई बहिन का प्रेम जताता, आता है रक्षा बंधन,
बंधन बँधता जाये सिर से, भैया दे बहिना उपहार।।
कच्चे धागे का यह बंधन, हर क्षण रहता है मजबूत,
प्राण देय पर आंच न आने दे, बहिना का यह दस्तूर।।

अत: हम सभी का यह कर्तव्य है कि रक्षाबंधन के धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक महत्व को समझकर अपने कर्तव्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित होकर समाज एवं राष्ट्रहित के लिए समर्पित भाव से कार्य करें ताकि मानव जीवन का चहुँमुखी विकास हो सके।

मोक्ष सप्तमी पर विशेष आलेख

प्रभु का स्पर्श हमें स्वर्ण नहीं, पारस बना देता है

पं. देवेश शास्त्री, बलेह

जैन धर्म के अनुसार श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ स्वामी के मोक्ष कल्याणक दिवस के रूप मैं मनाया जाता है। श्रावणशुक्ला सप्तमी को ही मुकुट सप्तमी कहा जाता है, अन्य किसी महीने की सप्तमी का नाम मुकुट (मोक्ष) सप्तमी नहीं है। श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। इसलिए इस दिन को उनके मोक्ष कल्याणक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को मोक्ष सप्तमी महोत्सव के रूप में भी मनाते हैं। जिनमंदिर जी मैं जय जयकारों एवं मंत्रोच्चार के साथ

भगवान का अभिषेक, विश्व शांति की मंगल कामना एवं सुख-समृद्धि के लिए शांतिधारा, एवं सामूहिक नित्य पूजा की जाती है साथ ही निर्वाण कांड के सामूहिक उच्चारण के बाद निर्वाण लाडू भी चढ़ाया जाता है एवं व्रत-उपवास भी खासतौर से माताएं, बहनें रखती हैं। आज के दिन मंदिरों में सांयकालीन बेला में अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन भी होते हैं। व्रतों के उद्यापन भी किये जाते हैं। तथा भगवान पार्श्वनाथ जी की आरती स्तुति की जाती है जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म बनारस के राजा अश्वसेन और रानी वामादेवी के यहां पौष कृष्ण एकादशी को हुआ था पौष कृष्ण की एकादशी तिथि को दीक्षा ली और श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन श्री सम्मेद शिखर जी पर्वत से मोक्ष प्राप्त कर लिया। वर्तमान में श्री सम्मेद शिखरजी झारखंड प्रांत में स्थित है। यह स्थान जैन समुदाय का सबसे प्रमुख तीर्थस्थान है क्योंकि यहां से 20 तीर्थंकर एवं असंख्यात मुनि इस पर्वत से सिद्ध हुए। जिस पर्वत पर पार्श्वनाथ को निर्वाण प्राप्त हुआ वह स्वर्ण भद्र कूट (पारसनाथ पर्वत) के नाम से जाना जाता है। लाखों श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आते हैं। जैन धर्म में सामान्यतः ऐसी मान्यता है कि जिस तरह से लड्डू रस से भरा होता है उसी प्रकार से मनुष्य की आत्मा भी यदि पवित्र रसों से भर जाए तो उसे परमात्मा की प्राप्ति करने में देर नहीं लगती। प्रभु का स्पर्श तो हमें स्वर्ण ही नहीं पारस बना देता है। हम भी पार्श्व प्रभु की तरह अपने भवों को कम करके निर्वाण प्राप्ति की ओर बढ़ें।

समाचार

श्री सुनील कुमार आई.ए.एस. सचिव पथ निर्माण विभाग तथा सर्वोच्च वन विभाग अधिकारी श्री राजीव रंजन के साथ श्री एम.पी.अजमेरा जी की भेंट

श्री सुनील कुमार आई ए एस सचिव पथ निर्माण विभाग झारखंड सरकार के साथ सम्मेद शिखरजी पहाड़ पर अवस्थित वंदना पथ की मरम्मत एवं निर्माण हेतु श्री एम पी अजमेरा जी के साथ सकारात्मक वार्ता हुई। श्री सुनील ने सभी अधिकारियों को बुलाकर शीघ्र प्रस्ताव देने का आदेश दिया।

पावन पर्वत पारसनाथ पर अनाधिकृत चल रही दुकानों को हटाने के संबंध में झारखंड सरकार के PCCF सर्वोच्च वन विभाग अधिकारी श्री राजीव रंजन जी आई.एफ.एस. के साथ एम.पी. अजमेरा जी की विस्तार से चर्चा हुई तथा निर्णय लिया गया कि पहाड़ पर अनाधिकृत दुकानों को पहाड़ से हटाकर नीचे बसाना है, ताकि पहाड़ की पवित्रता बनी रहे तथा इन लोगों के जीवन में भी सुधार हो जिसमें सरकार का सहयोग करना है। पहाड़ पर वृक्ष लगाने एवं पर्यावरण की सुरक्षा पर सकारात्मक वार्ता अजमेरा जी के साथ हुई।

जैन अल्पसंख्यक होने के लाभ: एक दृष्टि

डॉ. सुनील जैन, संचय, ललितपुर

अब जैन समुदाय भी भारत सरकार की ओर से अल्पसंख्यक दर्जा प्राप्त की सूची में शामिल है। ऐसे में इस समुदाय को भी अल्पसंख्यक के वही लाभ प्राप्त होंगे जो अन्य अल्पसंख्यक समुदाय को प्राप्त होते हैं।

भारतीय संविधान में अल्पसंख्यक शब्द का प्रयोग केवलमात्र २९ व ३० अनुच्छेद में हुआ है। इस व्यवस्था के अनुसार इस देश में नागरिकों का कोई एक वर्ग यदि अपनी भाषा, लिपी अथवा संस्कृति रखना है तो उसकी अक्षुण्णता को बनाकर रखने को उसे पूर्ण उसे पूर्ण अधिकार है।

किसी नागरिक को किसी भी शिक्षण संस्था में प्रवेश से जिसका संचालन राज्य द्वारा किया जाता है अथवा जो राज्य की आर्थिक सहायता से संचालित होता है, में जाति , धर्म, भाषा व मूलवंश के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता।

अनुच्छेद ३० स्पष्ट करता है कि अल्पसंख्यक चाहे उनका आधार भाषा अथवा धर्म हो वे अपने विवेक के आधार पर शिक्षण संस्थाओं की स्थापना व उनका संचालन शिक्षा के मापदण्डों को मानते हुए कर सकते हैं।

जैन अल्पसंख्यक (Jain Minority)

वर्तमान में बौद्ध, मुस्लिम, जैन, सिख, ईसाई, पारसी को सरकार द्वारा अल्पसंख्यक घोषित किया गया है। जैन समाज के अल्पसंख्यक घोषित होने से संविधान के अनुच्छेद २९ व ३० के अनुसार जैनधर्म, भाषा, संस्कृति की रक्षा संविधान के उपबंधों के अंतर्गत हो सकेगी। जैन समाज द्वारा स्थापित एवं संचालित शिक्षण संस्थाओं में पढाई करने व कराने के लिये जैन धर्मावलम्बियों को स्वतंत्र अधिकार प्राप्त हो गया है।

जब से जैन समुदाय को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक दर्जा प्रदान किया गया है तब से अन्य अल्पसंख्यक समुदाय की तरह ही जैन समुदाय के लोगों को भी देश के अन्य अल्पसंख्यक समुदायों की तरह सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का फायदा मिलने का रास्ता खुल गया है।

जैन समुदाय अपने निजी शिक्षण संस्थानों को स्वशासी बना सकेगा। आइये हम भी जानते हैं कि आखिरकर जैन समुदाय अल्पसंख्यक बनने पर कौन-कौन से जैन अल्पसंख्यक लाभ प्राप्त कर सकता है, संकलित किये गये लाभ इस प्रकार से हैं:-

जैन अल्पसंख्यक लाभ (Jain Minority Benefits)

१. जैन धर्म की सुरक्षा होगी।

२. कम ब्याज पर लोन व्यवसाय व शिक्षा तकनीकी हेतु उपलब्ध होंगे।

३. जैन धर्म की नैतिक शिक्षा पढाई कराने का जैन स्कूलों को अधिकार।

४. जैन कांलेजों में जैन के लिए ५० प्रतिशत आरक्षित सीट होंगी।

५. जैन धर्मावलंबियों के धार्मिक स्थल, संस्थाओं, मंदिरों, तीर्थक्षेत्रों एवं ट्रस्टों का सरकारीकरण या अधिग्रहण आदि नहीं किया जा सकेगा अपितु धार्मिक स्थलों का समुचित विकास एवं सुरक्षा के व्यापक प्रबंध शासन द्वारा भी किए जायेंगे।

६. जैन समुदाय के अल्पसंख्यक घोषित हो जाने से संविधान के अनुच्छेद २९ से ३० के अनुसार जैन समुदाय धर्म, भाषा, संस्कृति की रक्षा संविधान में उपलब्धों में अंतर्गत हो सकेगी।

७. उपासना स्थल अधिनियम १९९१ (४२ आक-१८-९-९१) के तहत किसी धार्मिक उपासना स्थल बनाए रखने हेतु स्पष्ट निर्देश जिसका उल्लंघन धारा ६ (३) के अधीन दंडनीय अपराध है। पुराने स्थलों एवं पुरातन धरोहर को सुरक्षित रखना सन् १९५८ के अधिनियम धारा १९ व २० के तहत सुरक्षित हो।

८. जैन धर्मावलंबी अपनी प्राचीन संस्कृति पुरातत्व एवं धर्मस्थलों का संरक्षण कर सकेंगे।

९. समुदाय द्वारा संचालित ट्रस्टों की सम्पत्ति को किराया नियंत्रण अधिनियम से भी मुक्त रखा जायेगा।

१०. जो प्रतिभावान अल्पसंख्यक विद्यार्थी जिले के उत्कृष्ट विद्यालयों में प्रवेश पाते हैं तो उनमें गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले विद्यार्थियों का ९वीं, १०वी, १२वीं कक्षा का शिक्षण शुल्क एवं अन्य लिया जाने वाला शुल्क पूर्णतः माफ कर दिया जायेगा।

११. जैन मंदिरों तीर्थ स्थलों, शैक्षणिक संस्थाओं इत्यादि के प्रबंध की जिम्मेदारी समुदाय के हाथ में दी जायेगी।

१२. अल्पसंख्यक समुदाय के धार्मिक स्थल के समुचित विकास एवं सुरक्षा के व्यापक प्रबंध शासन द्वारा किये जायेंगें।

१३. शैक्षणिक एवं अन्य संस्थाओं को स्थापित करने या उनके संचालन में सरकारी हस्तक्षेप कम हो जायेगा।

१४. जैन धर्मावलम्बी द्वारा पुण्यार्थ, प्राणीसेवा, शिक्षा इत्यादि हेतु दान, धन कर मुक्त होगा।

१५. विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कोचिंग कांलेजों में समुदाय के विद्यार्थियों को फीस माफ या कम होने की सुविधा प्राप्त होगी।

१६. जैन धर्मावलम्बी को बहुसंख्यक समुदाय के द्वार प्रताड़ित किये जाने की स्थिति में सरकार जैन धर्माबलंबी की रक्षा करेगी।

१७. सरकार द्वारा जैन समुदाय को स्कूल, कांलेज, छात्रावास, शोध या प्रशिक्षण संस्थान खोलने हेतु सभी सुविधाएं एवं रियायती दर पर जमीन उपलब्ध करवाई जायेगी।

१८. जैन समुदाय द्वारा संचालित जिन संस्थाओं पर कानून की आड में बहुसंख्यकों ने कब्जा जमा रखा है, उनसे मुक्ति मिलेगी।

१९. जैन समुदाय के विद्यार्थियों को प्रशासनिक सेवाओं और व्यवसायिक पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण हेतु अनुदान मिल सकेगा।

२०. अल्पसंख्यक वर्ग के युवाओं में खेलकूद व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रोत्साहन हेतु अनुदान एवं छात्रवृत्तियों में विशेष प्रावधानों का लाभ मिल सकेगा ताकि गरीबी रेखा से नीचे आने वाले तथा आर्थिक स्थिति में कमजोर वर्ग का शैक्षणिक सामाजिक एवं आर्थिक विकास हो सकेगा।

२१. अल्पसंख्यक समुदाय के लिए कराए गए आर्थिक सामाजिक, शैक्षणिक स्थिति के सर्वेक्षण के आधार पर रोजगार मूलक सुविधा का लाभ मिलेगा।

मैं अनेक वर्षो से जैन समुदाय के अल्पसंख्यक आन्दोलन से जुड़ा रहा, इसके बाद जैन अल्पसंख्यक लाभ योजनाओं की जानकारी सभी तक पहुंचे इस दृष्टि से जागरूकता लाने का प्रयास निरंतर कर रहा हूं। जानकारी के अभाव में लोग जैन अल्पसंख्यक लाभ से लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं।

आचार्य यतिवृषभ एवं उनकी तिलोयपण्णत्ती

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

जैनतीर्थ वन्दना के प्रत्येक अंक में एक महान दि. जैन आचार्य का विस्तृत परिचय एवं उनके कृतित्व पर शोधपूर्ण आलेख प्रकाशित करने की योजना है| इस श्रृंखला में प्रथम आलेख करणानुयोग के महान आचार्य यतिवृष्त का परिचय प्रस्तुत है। तिलोयपण्णत्ती अनेक दृष्टियों से पठनीय है तथापि हमने यहां गणितीय दृष्टि को प्रमुखता दी है।

जैन साहित्य के अन्तर्गत गणितीय सामग्री से युक्त करणानुयोग समूह के ग्रंथों के रचनाकारों में आ. यतिवृषभ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। तिलोयपण्णत्ती आपकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति है किन्तु इस कृति का गणितीय अध्ययन गणित इतिहासज्ञों के सम्मुख समीचीन रूप में प्रस्तुत न हो पाने के कारण आपको अद्यावधि विश्व इतिहास की पुस्तकों में समुपयुक्त स्थान प्राप्त न हो सका है।

निर्विवाद रूप से **कसायपाहुड़ पर चूर्णिसूत्रों तथा तिलोयपण्णत्ती** के रचनाकार आ. यतिवृषभ के जीवन के बारे में हमारा ज्ञान अत्यल्प है। आ. वीरसेन एवं आ. जिनसेन प्रणीत जयधवला टीका तथा आ. इन्द्रनन्दि कृत श्रुतावतार में उपलब्ध सामग्री के आधार पर आ. यतिवृषभ कषायप्राभृत के कर्ता आ. गुणधर के शिष्य आ. आर्यमंखु एवं आ. नागहस्ति के शिष्य थे। संभवतः वे आ. नागहस्ति के अन्तेवासी (Resident Scholar) (100-140 ई.) थे।

उपरोक्त दोनों आचार्यों को कसायपाहुड़ की रचना के मूल स्रोत **महाकम्मपयडिपाहुड़** एवं . पंचम पूर्वगत **पेज्जोद्सपाहुड़** का भी ज्ञान था। वे दृष्टिवाद अंग के लोक रचना विषयक कुछ अंशों के भी ज्ञाता थे।

पट्टावलियों से स्पष्ट है कि आचार्य धरसेन, पुष्पदन्त एवं भूतबलि तक को दृष्टिवाद अंग के एक अंश का ज्ञान था। आचार्य यतिवृषभ ने स्वयं तिलोयपण्णत्ती में लिखा है कि -

एदेण पयारेणं णिप्पण्णत्ति लोय-खेत्त दीहत्तं।
वास उदयं भणामों णिस्संदं दिटूठि-वादाओं ||

अर्थात् इस प्रकार से सिद्ध हुए त्रिलोक रूप क्षेत्र की लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई का हम (यतिवृषभ) वैसा ही वर्णन कर रहे हैं, जैसा दृष्टिवाद अंग से निकला है। उक्त दोनों तथ्यों के आलोक में एवं डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री द्वारा दिये गये विस्तृत विवेचन (तीर्थकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, भाग-2, पृ. 80-87) से यह निष्कर्ष निकलता है कि आचार्य यतिवृषम का काल दूसरी श.ई. है। तिलोयपण्णत्ती का सांस्कृतिक मूल्यांकन (वैशाली 2010) . में भी विभिन्न मतों का परीक्षण कर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि आ. यतिवृषभ को आ. कुन्दकुन्द के बाद ही मानना उचित प्रतीत होता है अतः ई. सन् 176 ई. के आसपास आ. यतिवृषभ का समय स्वीकार करना चाहिए। कृति में जिन राजाओं एवं राजवंशों का उल्लेख है वे परिवर्ती आचार्यों ने क्षेपक रूप में जोड़ दिये गये हैं। फलतः कुछ विद्वान उन्हें 609 ई. एवं अन्य उन्हें 9वीं श.ई. तक ले जाते है। किन्तु प्रो. टी. ए. सरस्वती (Geometry in Ancient & Medieval India, P-10) एवं डॉ. एन. शिवकुमार ने उन्हें दूसरी श.ई. का माना है। नेमिचन्द्र शास्त्री ने भी लिखा कि यतिवृषभ का काल 176 ई. के आसपास है। क्षेपक अंशों के आधार पर कई विद्वान आ. यतिवृषभ को आर्यभट का समकालीन या 473-609 ई. के मध्य का स्वीकार करते हैं। सरस्वती के शब्दों से भी तिलोयपण्णत्ती के मूल रूप की प्राचीनता स्पष्ट है-

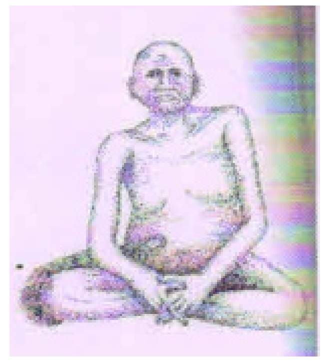

"Tiloyapannatti is perhaps
Letter reduction of much
earlier work"

कृतित्व : यद्यपि निर्विवाद रूप से आपकी 2 कृतियाँ ही मान्य हैं 1. कषाय प्राभृत के चूर्णिसूत्र 2. तिलोयपण्णत्ती तथापि अनेक विद्वान कम्मपयादि चूर्णि, शतकचूर्णि (दोनों के मूल ग्रन्थकर्ता शिवशर्माचार्य है) तथा सित्तारिचूर्णि शीर्षक चूर्णियों की रचना का श्रेय भी आपको ही देते हैं। आपके द्वारा करणसूत्र की रचना का भी उल्लेख मिलता है किन्तु वर्तमान में यह उपलब्ध नहीं है संभवत: यह कोई गणितीय संकलन ग्रंथ रहा होगा|

वर्तमान में उपलब्ध आपकी 2 कृतियों में से प्रथम कसायपाहुड़ चूर्णिसूत्र के 15 अध्यायों में कर्मसिद्धांत का सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण विवेचन है। इसमें उपशम एवं क्षपणा के गणितीय पक्ष का निखार है। वस्तुतः इसके 15 अध्यायों में कर्म परमाणु के आत्मा से आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा के रूप में जिस निकाय (System) की रचना मिलती है, वह विगत कुछ दशकों में विकसित System Theory से तुलनीय है।

परम्परा के आधार पर त्रिकालवर्ती विश्व रचना को व्यक्त करने वाला 9 अध्यायों में विभक्त ग्रंथ तिलोयपण्णत्ती मूलतः गणितीय ग्रंथ नहीं है तथापि सूत्रबद्ध प्ररूपणाओं में लोक के वर्णन तथा यत्र-तत्र विवेचन में गणितीय सामग्री"विधियों का उपयोग गणित इतिहासज्ञों हेतु बहुमूल्य है। लक्ष्मीचन्द्र जैन के निम्नलिखित शब्द दृष्टव्य है-

"कर्म सिद्धान्त एवं अध्यात्म-सिद्धान्त विषयक ग्रन्थों में प्रवेश करने हेतु इस ग्रंथ का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। कर्म परमाणुओं द्वारा आत्मा के परिणामों का दिग्दर्शन जिस गणित द्वारा प्रबोधित किया जाता है उस गणित की रूपरेखा का विशेष दूरी तक इस ग्रंथ में परिचय कराया गया है।"

1. नेमिचन्द्र शास्त्री, तिलोयपणत्ती में श्रेणी व्यवहार गणित सम्बन्धी दस सूत्रों की उत्पत्ति, जैन सिद्धान्त भास्कर (आरा), 22(2) पृ. 42-50, 1955
2. लक्ष्मीचन्द्र जैन, तिलोयपण्णत्ती का गणित, अन्तर्गत जम्बूढीवपण्णत्तिसंगहों, सोलापुर, १958
3. T.A. Sarswati, The Mathematics of first four Mahadhikars

of Trilokaprajnapti, J. Ganganantha Research Institute (Ranchi), 8 PP. 27-51, 1961

4. L.C. Jain Aryabhata-1 and Yativrsabha : A Study in Kalpa and Meru, 1 J.H.S. 12 (2), PP. 137-146, 1997

5. लक्ष्मीचन्द्र जैन, तिलोयपण्णत्ती एवं उसका गणित, अंतर्गत तिलोयपण्णत्ती, भाग-१, कोटा, पृ. 56-74, 1984

6. L.C. Jain & Anupam Jain, Philosopher Mathematician (Yativrsabha, Virasena & Nemicandra), D.J.I.C.R., hastinapur, 1985

7. अनुपम जैन, दार्शनिक गणितज्ञ-आचार्य यतिवृषभ, अर्हत्वचन (इन्दौर), 1(2), पृ.17-24, 1988

8. अनुपम जैन, दार्शनिक गणितज्ञ-आचार्य यत्तिवृषभ की गणित्तीय प्ररूपणाएँ, जगन्मोहनलाल शास्त्री साधुवाद ग्रन्थ, रीवा, 3१0-3१3, १989

9. लक्ष्मीचन्द्र जैन, तिलोयपण्णत्ती के चतुर्थाधिकार का गणित, तिलोयपण्णत्ती, भाग-2, कोटा, पृ. 26-35, १997

10. लक्ष्मीचन्द्र जैन, तिलोयपण्णत्ती के पाँचवे एवं साँतवे महाधिकार का गणित, तिलोयपण्णत्ती, भाग-3, कोटा, पृ. 34-45, १997

11. L.C. Jain, Mathematical Content of Digmbara Jaina Texts of Karnanuyoga Group, Indore, Vol. 1, 2003

12. L.C Jain & Rajendra Trivedi, Philosopher Karma Scientist, Barhmi Sundari Prasthashram, Jabalpur, 2003

13. L.C. Jain & Br. Prabha Jain, Exact Sciences in Karma Antiquity, VOl-1, Jabalpur, 2007

14. अनुपम जैन एवं एन. शिवकुमार, Acarya Yativrsabha and his mathematical contributions, Arhat Vacana, 17(2-3), April-Sep. 2005, P.-31-41

15. सौरभ उपाध्याय, Acarya Yativarsabha and his mathematical Contributions, M.Sc. Project, Holkar Science Collage, indore, 2006

16. एन. शिवकुमार, Acarya Yativarsabha and his mathematical Contributions, Ph.D. Thesis, Mysore University, Mysore, 2007

प्रो. एल.सी. जैन (जबलपुर) एवं श्री दशस्थ जैन (छतरपुर) द्वारा तिलोयपण्णत्ती की गाथाओं का अंग्रेजी अनुवाद किया है। जहाँ प्रो. एल. सी. जैन ने स्वयं को गणितीय गाथाओं के अनुवाद तक सीमित रखा वहीं दशरथ जी ने पूरे ग्रन्थ का अनुवाद किया है। एल.सी. जैन सा. का गणितीय विश्लेषण बहुत उपयोगी है।

1. L.C., Exact Sciences in the Karma Antiquity, Vol. I, Translation and notes on Tiloyapannatti, Jabalpur, 2003
2. Dashrath Jain & P.C. Jain, Vol. I-3, English Translation of Tiloyapannatti, Jaina Granthagar, Delhi, 2012

तिलोयपण्णत्ती की गाथाओं का अध्यायवार विवरण

महाधिकार क्र.	अध्याय का शीर्षक	डॉ.हीरालाल जैन के संस्करण में गाथाएँ	आ. विशुद्धमति के संस्करण में अति. गाथाएँ	गद्य अक्षरों के समतुल्य गाथाएँ	कुल
01	प्रस्तावना एवं सामान्य जगत्स्वरूप निरूपण	283	03	91	377
02	नारक लोक स्वरूप निरूपण	367	04	12	383
03	भवनवासी लोक स्वरूप	242	12	12	266
04	मनुष्य लोक स्वरूप निरूपण	2951	55	107	3113
05	तिर्ग्लोक स्वरूप निरूपण	321	02	784	1071
06	व्यंतर लोक स्वरूप निरूपण	103	-	06	109
07	ज्योतिलोक स्वरूप निरूपण	619	05	99	723
08	देवलोक स्वरूप निरूपण	703	23	29	755
09	सिद्धलोक स्वरूप निरूपण	77	05	03	85
योग	**नौ अध्याय**	5666	109	1107	6882

तिलोयपण्णत्ती में अनेक गणितीय वैशिष्ट्य है किन्तु स्थान की सीमा के कारण हम उनका विस्तृत विवरण नहीं दे रहे हैं। कतिपय बिन्दु निम्नवत् हैं -

1. मापन पद्धति:- यहाँ पंचास्तिकाय के समान काल की सूक्ष्मतम इकाई समय को परिभाषित किया गया है वहीं सबसे बड़ी इकाई अचलात्म का मान भी निकाला गया है।

$$1 \text{ अचलात्म} = 84^{31} \times 10^{90}$$

इसके अलावा पल्य, सागर आदि भी विवेचित है। क्षेत्र माप के सन्दर्भ में प्रदेश से लेकर बड़ी-बड़ी इकाई महायोजन, रज्जु को भी बताया है किन्तु एक बड़ी विशेषता जगत्श्रेणी को पल्य के साथ अर्द्धच्छेद $\log_2$ के माध्यम से जोड़ा है जो अद्वितीय है। अर्द्धच्छेद ($\log_2$) एवं वर्गशलाका ($\log_2 \log 2$) का प्रयोग तिलोयपण्णत्ती के अलावा धवला टीका (816ई.) में अधिक विस्तार से किया गया है।

2. संख्या सिद्धान्त:- 2 को जघन्य संख्यात मानकर प्रारम्भ वर्गीकरण में संख्याओं के संख्यात (3), असंख्यात (9) एवं अनन्त (9) रूप कुल 21 भाग किये गये हैं।

3. ज्यामितीय सूत्र:- तिलोयपण्णत्ती में लोक रचना को बताने के क्रम में अनेक ज्यामितीय आकृतियों एवं उनके क्षेत्र फल, आयतन आदि निकालने के सूत्र दिये गये हैं। पुरुषाकार लोक रचना का आयतन 343 धन रज्जु बताया

गया है। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में बनी तीन लोक रचना प्रो. टी. अम्मा सरस्वती लिखती हैं

First Four Mahadhikars of Tiloyapannatti is a store house of Mathematical formulae.

किसी बड़ी आकृति को छोटे-छोटे टुकड़ों में भाजित कर उसका आयतन/क्षेत्रफल निकालने की रीति बहुत उपयोगी है। यहाँ p का मान Ö10 लिया है।

4. प्रतीकात्मकता:- Cryptography आज गणित की महत्त्वपूर्ण शाखा है। इसमें विवरणों को संकेतों/प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। तिलोयपण्णत्ती में लगभग 20-25 प्रतीकों का कुशलता से प्रयोग किया गया है ये बीजीय भी है एवं रेखा गणितीय भी है।

5. श्रेणी व्यवहार के संबंध में नेमिचन्द्र शास्त्री (1955) एवं प्रो. एल. सी. जैन (1958) ने विस्तारपूर्वक चर्चा कर इस ग्रंथ में उपलब्ध सूत्रों को इंगित किया है।

6. दीर्घ संख्याओं को व्यक्त करने की वर्गित संवर्गित की रीति (Self Powerial System) का सर्वप्रथम प्रयोग इसी ग्रन्थ में पाया जाता है। इसके बाद आचार्य वीरसेन जी ने इसका धवला में विस्तृत प्रयोग किया है। उपरोक्त अध्ययनों में तिलोयपण्णत्ती के विविध गणितीय पक्षों को उद्घाटित किया गया है। इनमें ज्यामिति एवं श्रेणी व्यवहार के अनेक तथ्य सामने आये हैं किन्तु काल निर्धारण में त्रुटि हो जाने के कारण हम तिलोयपण्णत्ती में निहित गणितीय सामग्री का समीचीन मूल्यांकन नहीं कर सके। मैं यहाँ शून्य के प्रयोग संबंधी कुछ बिन्दुओं पर चर्चा करूँगा।

7. शून्य का प्रयोग:- तिलोयपण्णत्ती (2सरी श.ई.) के सभी महाधिकारों में शून्य का प्रयोग (गाथा 1/123, 1/124, 2/289, 3/81 आदि में) किया गया है। मैं यहाँ चतुर्थ महाधिकार की एक गाथा उद्धृत कर रहा हूँ।

सुण्णणभ-गयण-पण-दुग-एक्क-ख-तिय सुण्ण णवण्हा सुण्णं।
छक्केक्क जोएगा चिय, अंक कमे मणुव, लोय खेलफलं।।

16009030125000

अर्थात् शून्य शून्य शून्य पाँच, दो, एक, शून्य, तीन, शून्य, नौ, शून्य, शून्य, छः, एक अंक प्रमाण अर्थात 16009030125000 योजन मनुष्य लोक का क्षेत्रफल है। यहाँ शून्य का स्थानमान सहित प्रयोग दृष्टव्य है।

एक अन्य उदाहरण देखिए- तिलोयपण्णत्ती ग्रंथ में अंक गणना में शून्य का उपयोग ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।

एक्कत्तीस-ट्ठाणे, चउसिदिं पुह पुह ट्ठवेदूणं।
अणोण्ण-हदे लद्धं, अचलप्पं होदि णउदि-सुण्णगं।।

अर्थात् पृथक पृथक (31) स्थानों में (84) को रखकर और उनका परस्पर गुणा करके आगे नब्बे शून्य रखने पर अचलात्म का प्रमाण प्राप्त होता है। इस गाथा में अचलात्म नामक काल को एक संकेतना द्वारा दर्शाया गया है यह मान $(84)^{31} \times 10^{90}$ प्रमाण वर्ष होता है। क्या बिना शून्य के ज्ञान के इसका मान निकालना संभव है? इससे अधिक स्पष्ट शून्य का स्थानमान सहित प्रयोग और क्या होगा? इस प्रयोग के आधार पर मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूँ कि जैन परम्परा में शून्य का ज्ञान दूसरी श.ई. में प्रचलित था। चूँकि यह ग्रंथ दृष्टिवाद के आधार पर लिखा गया है अतः इसका मूल रचनाकाल 2सरी श.ई. के बाद का तो हो ही नहीं सकता। हाँ! इतना जरूर है कि इसका आधार-परम्परा का ज्ञान है। दुनिया यह मानती है कि शून्य का सर्वप्रथम प्रयोग भारत में हुआ है। नीदरलैंड में Zerorigindia जैसे अशासकीय संगठनों का सक्रियता से कार्य करना इसका एक प्रमाण है। इसका सर्वप्रथम लिखित प्रमाण तिलोयपण्णत्ती में ही मिला। आ. सर्वनन्दि द्वारा प्रणीत लोए विभाग (458ई.) तिलोयपण्णत्ती के बाद ही लिखा गया है जिसमें शून्य का विश्व में सर्वप्रथम प्रयोग George Ifrah द्वारा स्वीकार किया है। तिलोयपण्णत्ती की मूड़बिद्री एवं श्रवणबेलगोला से प्राप्त 800 वर्ष से अधिक प्राचीन पाण्डुलिपियों में अनेक संदृष्टियाँ बनी है। इन बीजीय संदृष्टियों का समीचीन मूल्यांकन अब तक नहीं हुआ है। यदि इन दृष्टियों से तिलोयपण्णत्ती का अध्ययन किया जाये तो दिगम्बरत्व का गौरव बढ़ेगा।

हमारे महान तीर्थ जो सक्षम है उन्हें श्रवणबेलगोल, श्री तिजारा जी एवं श्री महावीर जी के समान साहित्य प्रकाशन एवं संशोधन पर भी ध्यान देना चाहिए।

सिरपुर (छत्तीसगढ़) में प्राप्त प्राचीन जैन तीर्थंकर और यक्ष-यक्षी प्रतिमाएँ

- मनीष जैन, उदयपुर (राजस्थान)

सिरपुर नगर छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 78 किमी पूर्व की ओर महासमुंद जिला मुख्यालय से 35 किमी की दूरी पर महानदी के तट पर स्थित है। प्राचीन नगर सिरपुर 5वीं सदी से 10वीं सदी के मध्य कोसल, महाकोसल प्रदेश और चेदि, कलचुरि, सोमवंशी राजाओं की राजधानी रहा था। कई विद्वानों ने सिरपुर पर अनुसंधान करके अपनी लेखनी से यहाँ की प्राचीन संस्कृति, इतिहास और धरोहरों पर और अधिक प्रकाश डाला है।

सिरपुर नगर आज अपनी पुरातत्व सामग्री, अवशेषों, खोजों के लिए विश्वपटल पर अंकित हो चुका है। सन 1950 के बाद से ही यहाँ उत्खनन कार्य

हिन्दू मंदिरों में विराजमान प्राचीन जैन प्रतिमाएं, सिरपुर

संग्रहालय में स्थित प्राचीन जैन यक्षी प्रतिमाएं, सिरपुर

संग्रहालय में स्थित प्राचीन जैन तीर्थंकर प्रतिमाएं, सिरपुर

प्रारम्भ हो गया था किन्तु सन् 2003 के बाद यहाँ पुरातात्विक उत्खनन के कार्य ने गति पकड़ी। यहाँ से बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म और जैन धर्म तीनो धर्मों से संबंधित कई प्राचीन मंदिर, सामग्री और अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसका अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ छोटे बड़े 100 बुद्ध विहार; जिनमें 12 मुख्य हैं, 40 से अधिक हिन्दू मंदिर, शिव मंदिर, विष्णु मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, देवी मंदिर इत्यादि तथा 4 जैन विहार, मंदिर प्राप्त हुए हैं। यहाँ से प्राप्त कई प्रतिमाएँ और सामग्री यहाँ के पुरातत्व संग्रहालय में और रायपुर के संग्रहालय में रखी गई हैं। सिरपुर में उत्खनन से मिले जैन विहार सातवाहन काल के हैं जो कि नीचे की सतह से मिले हैं। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध धर्म के आगमन से पूर्व ही सिरपुर में जैन धर्म के अनुयायी आ गए थे। ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में जब सिरपुर में व्यापार चरम सीमा पर था तो वहाँ जैन धर्म की स्थापना हो चुकी थी।

संग्रहालय में स्थित प्राचीन अन्य जैन तीर्थंकर प्रतिमाएं, सिरपुर

छोटी-बड़ी कई जैन प्रतिमाएँ यहाँ के एक वृहद जैन मंदिर के ढांचे से प्राप्त हुई हैं, जिनमें कई तीर्थंकर प्रतिमाएँ और यक्ष-यक्षी प्रतिमाएँ हैं। इनमें से अधिकांश 7वीं शताब्दी से 10वीं शताब्दी की हैं। सिरपुर से तीन-चार जैन तीर्थंकर प्रतिमाएँ अखंडित अवस्था में प्राप्त हुई हैं, जिनमें 2 खड्गासन और 2 पद्मासन अवस्था में हैं और यहाँ के किन्ही हिन्दू मंदिरों में मौजूद हैं। सबसे मुख्य जैन प्रतिमा महावीर स्वामी की है जो कि 8 फ़ीट की खड्गासन अवस्था में है और सिंदूर पोतकर लाल रंग की कर दी गई है। यहाँ से ऋषभदेव भगवान की 9वीं सदी की एक ताम्र प्रतिमा भी प्राप्त हुई है। अधिकांश प्रतिमाएँ सिरपुर में ही स्थित प्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर के परिसर में स्थित राजकीय पुरातत्व संग्रहालय में रखी गई हैं।

ज्ञात रहे कि सिरपुर नगर 11वीं शताब्दी में आए विनाशकारी भूकम्प और महानदी की विनाशकारी बाढ़ में नष्ट हो गया था। चीनी यात्री ह्वेत्सांग ने भी 639 ईस्वी में इस नगर का भ्रमण किया था। तब यह नगर बौद्ध, ब्राह्मण और जैन धर्म का एक केंद्र हुआ करता था। इतिहासकारों अतुल प्रधान और शम्भुनाथ यादव के अनुसार यहाँ के विहारों में एक समय 1,000 से अधिक जैन साधु और 10,000 के करीब बौद्ध भिक्षु रहा करते थे।

तो अगली बार आप जब भी रायपुर जाएँ या महासमुंद की ओर से गुजरें तो सिरपुर अवश्य जाएँ और प्राचीन धरोहरों और पुरागौरव के पलों को अनुभव करें। साथ ही प्राचीन जैन प्रतिमाओं और अवशेषों की उचित देखरेख की मांग पुरातत्व विभाग से अवश्य करें।

आचार्य कुंदकुंदजी की जन्मभूमि कोनकोंडला क्षेत्र के विकास के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को सरकार से मिली अनुमति

- दिनेश सेठी, चेन्नई

पूर्व कर्नाटक राज्य के अनंतपुर जिले गुत्ति तहसील गुंतकल रेलवे स्टेशन से ६ कि.मी की दूरी पर कोनकोंडल गांव मे आचार्य श्री कुन्दकुन्द भगवान् का जन्म हुआ था| आचार्यश्री को कोनकोंडल, कोंडकुंद एवं कुंदकुंद नाम से जाना जाता है। बचपन से ही आचार्य कुंदकुंद आध्यात्म व आत्मचिंतन में तल्लीन रहते थे। आचार्य कुन्दकुन्द ने ११ वर्ष की उम्र में दिगम्बर मुनि दीक्षा धारण की थी। इनके दीक्षा गुरू का नाम आचार्य जिनचंद्र था। ये जैन धर्म के प्रकाण्ड विद्वान थे। आचार्य कुंदकुंद ने दिगंबर मुनि पद पर रहकर ४४ आचार्य पीठ का पदारोहण किया , आचार्य श्री का पूरा जीवन संयम, तप, साधना एवं ग्रंथों की रचना में व्यतीत हुआ। आचार्य श्री के तपप्रभाव से उन्हें चारण ऋद्दि प्राप्त हुई थी जिससे उन्होंने सिद्धांत के विषय में निव्रत्त होने के लिए विदेह क्षेत्र जाकर श्रीमंधर स्वामि से संदेह का परिहार लिया और ज्ञानार्जन संपाद कर वापस आकर श्रमण परमपरा के मुनिराजों को बोध कराया। आचार्य श्री ने समयसार, नियमसार, प्रवचनसार, अष्टपाहुड, पंचास्तिकाय, रयणसार, दशभक्ति आदि अनेक ग्रंथों की रचना की।

आचार्य कुंद-कुंद भगवान की जन्मभूमि के विकास के लिए भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने योजना बनाई है भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई के तात्कालिक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचन्द्र जैन एवं कार्याध्यक्ष व महामंत्री श्री राजेंद्र के.गोधा निरंतर प्रयास कर रहे थे कि कोनाकोंडला के रससिद्दलागुट्टा पहाड़ की ४२.७९ एकड़ की भूमि शीघ्र तीर्थक्षेत्र कमेटी को मिले ताकि आचार्य कुंदकुंद देव की जन्मभूमि का विकास किया जा सके।

पहाड़ पर दिगंबर जैन मंदिर, धर्मशाला व आचार्य कुंदकुंद स्मारक बनाने के लिए भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई ने आंध्रप्रदेश सरकार और कलेक्टर को दिनांक २२-७-२०१९ को पहला निवेदन पत्र भेजा। अनंतपुर जिला के कलेक्टर ने इस क्षेत्र के बारे में पूरी जानकारी लेकर पुरातत्व विभाग से अनुमति लेकर विकास करने का सुझाव दिया था।

भारतवर्षीय दिगंबर तीर्थक्षेत्र कमेटी ने पुरातत्व विभाग के आयुक्त (commissioner) श्री विजयवाड़ा को इस क्षेत्र के बारे में दूसरी बार दिनांक ६-१२-२०१९ को निवेदन पत्र लिखा। जिसके परिणाम स्वरूप अनंतपुर के कलेक्टर ने वज्रकरूर तहसील के मंडल तहसीलदार को इस तीर्थ को पूरी जानकारी भेजने के लिए निर्देश जारी किया था जिसके बाद वज्रकरूर तहसीलदार ने कलेक्टर के लिए कोनाकोंडला जैन क्षेत्र और भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई से प्राप्त निवेदन पर कलेक्टर को रिपोर्ट भेज दी।

तीर्थक्षेत्र कमेटी में नियुक्त श्री सुरेश जैन ने इस आशय का पत्र लेकर अनंतपुर जिले के कलेक्टर श्री सत्यनारायण जी (आईएएस) से उनके निवास पर जाकर भेंट की और तहसीलदार द्वारा प्रेषित पत्र की प्रति कलेक्टर को प्रस्तुत की। कलेक्टर महोदय ने आश्वासन दिया कि आंध्रप्रदेश सरकार से मैं निवेदन करूंगा कि कोनाकुंडला के जैन तीर्थक्षेत्र की ४२.७९ एकड़ भूमि भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई को सौंपकर उन्हें क्षेत्र के विकास की अनुमति दी जाए, मैं पूर्ण रूप से मदद करूंगा। उन्होंने आवश्यक कार्यवाही के लिए उस पत्र को आगे प्रेषित भी कर दिया।

आचार्यश्री कुंदकुंद स्वामी की जन्मभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले श्री प्रभातचंद्र जैन जी ने शीघ्र इस क्षेत्र की कायाकल्प के उद्देश्य से कोरोनाकाल में पहली वर्षा के बाद ही क्षेत्र पर वृक्षारोपण करने का निर्देश दे दिया। कोनाकोंडला में २१.०८.२०२० को क्षेत्र के चारों ओर अलग-२ प्रकार के पौधों का रोपण किया गया साथ ही आने वाले समय में यहाँ पर ५०० पौधों का रोपण करने की योजना बना दी।

कोनाकोंडला में १६.०९.२०२० को आँध्रप्रदेश पुरातत्व विभाग हैदराबाद की सहायक निदेशक टीम ने आकर आचार्य कुंद कुंद जन्मभूमि के पूरे पहाड़ का सर्वेक्षण किया और सर्वेक्षण रिपोर्ट को अपने विभाग के मुखिया को सौंपा ताकि भूमि पर विकास कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को अनुमति प्रदान की जाये।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सतत प्रयासों से पुरातत्व विभाग के कमिश्नर ने दिनांक २७-०७-२०२१ को कोनकोंडला क्षेत्र के विकास के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को अनुमति प्रदान कर दी है।

कोनकोंडला विकास योजना में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं तमिलनाडु अंचल आप सभी से अनुरोध करता है कि इस क्षेत्र के विकास-संवर्धन के लिए तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
श्री शिखरचंद पहाड़िया-राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री संतोष जैन पेनधारी-राष्ट्रीय महामंत्री

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, तमिलनाडु अंचल
श्री दिनेश सेठी-अध्यक्ष
श्री संजय ठोल्या-महामंत्री

परीक्षण कर्मचारी
श्री सुरेश जैन

तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन, सिकंदरबाद का अयोध्या एवं रत्नपुरी तीर्थक्षेत्र का भ्रमण

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन ने २७ जुलाई से ३१ जुलाई, २०२१ तक ५ तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या जी एवं भगवान धर्मनाथ की जन्मभूमि रत्नपुरी का भ्रमण किया गया, इस भ्रमण में अयोध्या जी तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री अमरचन्द जैन लखनऊ एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य डॉ. जीवन प्रकाश जैन हस्तिनापुर तथा प्रबन्धक श्री मनोज कुमार जैन अयोध्या उपस्थित रहें।

जैसा कि सर्वविदित है कि अयोध्या जी का विकास अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने जा रहा है तथा अयोध्या जी भगवान राम की जन्मभूमि के साथ-साथ ५ तीर्थंकरों की भी जन्मभूमि है। जैन संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जिलाधिकारी श्री अनुज कुमार झा से विस्तृत चर्चा हुई, जिसमें कि उन्होंने पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया, इसके साथ-साथ अयोध्या विकास प्राधिकरण के वाइस चैयरमेन एवं सचिव श्री आर.पी. सिंह से भी भेंट की, उन्होंने भी कहा कि उ.प्र. शासन की नीति के अंतरगत जो भी सम्भव हो सकेगा, वह हम करेंगे। जिला पर्यटन अधिकारी से भी भेंट की तथा उनसे भी विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई, उन्होंने बताया कि हमारे विभाग द्वारा क्षेत्र पर फसाड़ लाइट, सोलर सिस्टम तथा पानी आदि की व्यवस्था की जानी सम्भव है। अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री अमरचन्द जैन से कहा गया कि क्षेत्र पर आवश्यक सुविधायें पर्यटन विभाग से प्राप्त करने का प्रयास करें।

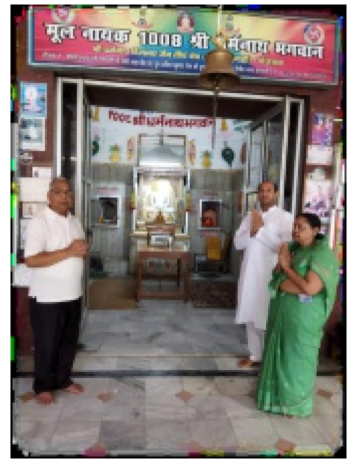

राम मन्दिर परिसर में बनने वाले विशाल म्यूजियम के सम्बन्ध में रामजन्मभूमि ट्रस्ट के महामंत्री श्री चम्पतराय जी से भी भेंट की तथा बनने वाले म्यूजियम में जैन संस्कृति को भी स्थान देने का निवेदन किया गया, जिस पर उन्होंने बताया कि म्यूजियम सर्वधर्म सम्भाव के आधार पर बनाया जायेगा और निश्चित ही उसमें जैन संस्कृति का प्रदर्शन रहेगा।

अयोध्या स्थित बडी मूर्ति जैन मन्दिर एवं पाँचों तीर्थंकरों की जन्मभूमि के भी दर्शन किये तथा प्रबन्धक महोदय को आवश्यक सुझाव दिये गये।

दिनाँक ३१ जुलाई, २०२१ को भगवान धर्मनाथ की जन्मभूमि रत्नपुरी के दर्शन किये तथा वहाँ पर देखा मन्दिर के निकट ही सरयू नदी विशाल रूप से बह रही है, जिसके किनारे जैन समाज के पास कुछ स्थान भी है, जिसे कि सुन्दर घाट के रूप में भी विकसित किया जा सकता है, इस सन्दर्भ में वहाँ क्षेत्र के अध्यक्ष से चर्चा हुई और उन्होंने आवश्यक कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड अंचल के वरिष्ठ पदाधिकारियों का तीर्थक्षेत्र भ्रमण

२४ जुलाई, 2021 को भगवान पारसनाथ के केवलज्ञान भूमि अहिच्क्षेत्र जिला-बरेली का भ्रमण किया गया, इस भ्रमण में तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन सिकंदराबाद, कार्याध्यक्ष श्री एम.एस. जैन मेरठ, महामंत्री श्री मनोज जैन मेरठ, कोषाध्यक्ष श्री दिनेश जैन रामपुर एवं मंत्री श्री राकेश कुमार जैन मेरठ उपस्थित रहे। श्री पारसनाथ केवलज्ञान भूमि अहिच्क्षेत्र के अध्यक्ष श्री विनोद बिहारी जैन एवं महामंत्री श्री अखिलेश जैन रामपुर ने सभी पदाधिकारियों का स्वागत किया।

क्षेत्र की स्थिति पर विचार-विमर्श हुआ, श्री विनोद बिहारी जैन ने बताया कि हम आदितीर्थ श्री अहिच्क्षेत्र पारसनाथ की महत्ता पर एक लघु पुस्तक का प्रकाशन कराने का विचार कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा २ एकड़ भूमि में थीम पार्क बनाया गया है, जिसमें काफी निर्माण कार्य हुआ है, परन्तु उसका उपयोग नहीं हो पा रहा है कृपया तीर्थक्षेत्र कमेटी

हमारा मार्गदर्शन करें कि उस थीम पार्क का उपयोग किस प्रकार से हो सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि क्षेत्र के पास लगभग ७०-८० बीघा भूमि भी है, जिस पर बाउंड्रीवाल भी नहीं है, यदि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी इस भूमि की बाउंड्रीवाल करा देती है तो यह भूमि सुरक्षित हो जाएगी। इस पर अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन बताया कि आप एक आवेदन पत्र भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नाम बनाकर भेजें, हम उसे अपनी संस्तुति के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी को भेज देंगे और प्रयास करेंगे कि आवश्यक धनराशि आपको मिल सके, जिससे कि क्षेत्र पर स्थित भूमि सुरक्षित रह सके। तत्पश्चात क्षेत्र की प्रबंध समिति ने पदाधिकारियों को नवनिर्मित विशालकाय चौबीसी मंदिर के दर्शन कराये, जोकि निःसंदेह दर्शनीय एवं वन्दनीय है।

दिगम्बराचार्य विशुद्ध सागर जी की कृति सत्यार्थ प्रबोध का विमोचन

प्रकाशन का पुण्य अर्जन किया अनिल उर्मिल जैन कनाडा ने

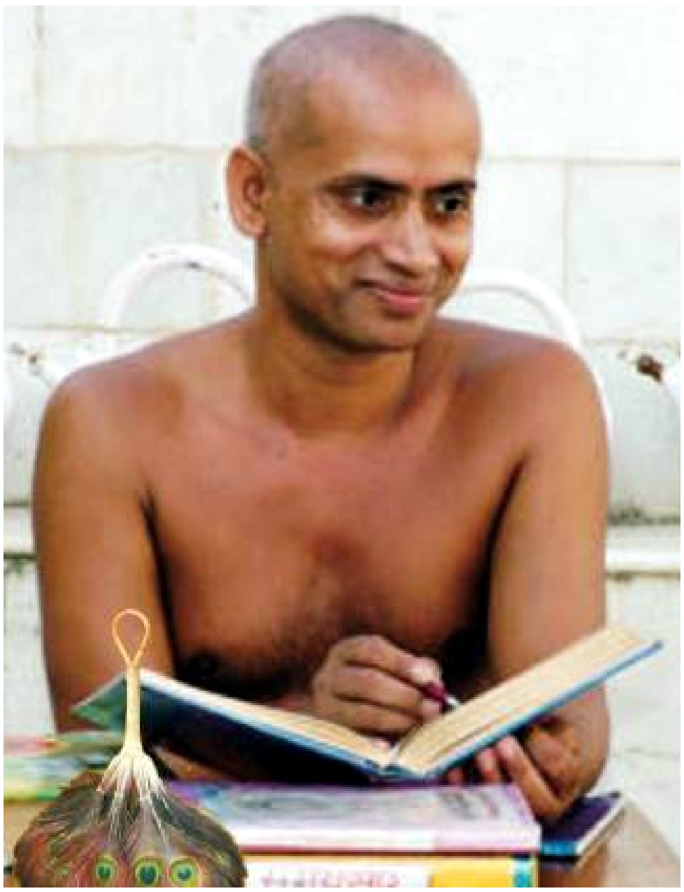

परम पूज्य चर्या शिरोमणि दिगंबर आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज द्वारा रचित ग्रंथ राज सत्यार्थ प्रबोध का विमोचन २३ जुलाई २०२१ को शाश्वत तीर्थ धाम सम्मेद शिखरजी में संपन्न हुआ। चातुर्मास स्थापना के अवसर पर हुए इस ग्रंथ विमोचन समारोह का पुण्य अर्जन सुप्रसिद्ध श्रावक श्रेष्ठी श्री अनिल उर्मिल जैन (बड़ौत कनाडा) ने किया।

संघस्थ पूज्य मुनि श्री सुव्रत सागर जी महाराज ने बताया की नैतिक शिक्षा से परिपूर्ण, सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, सहजता आदि समसामयिक निबंधों का संकलन सत्यार्थ प्रबोध में किया गया है। ग्रंथ का संपादन सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. फूलचंद जी प्रेमी ने किया है। ग्रंथ का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली द्वारा किया गया है।

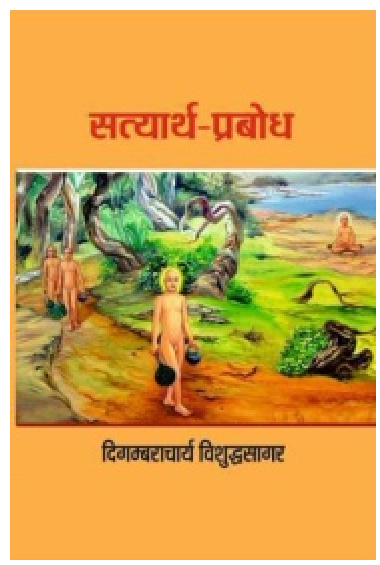

ग्रंथ प्रकाशन के पुण्यार्जक श्री अनिल जैन कनाडा ने बताया कि आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के साथ वैशाली में रहने का अवसर प्राप्त हुआ, उनकी सहज मुस्कान, सरल आगम अनुकूल चर्या जन सामान्य को सहज ही आकर्षित करती है। आचार्य श्री द्वारा रचित ग्रंथ का प्रकाशन करा कर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता है कि मां जिनवाणी के प्रचार प्रसार में उनके द्रव्य का सदुपयोग हुआ है। सम्मेद शिखरजी में पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के संघस्थ २८ दिगम्बर मुनियों की चातुर्मास स्थापना हुई। श्री दिगंबर जैन तेरापंथी कोठी सम्मेदशिखर जी मधुबन झारखंड में आचार्य संघ विराजमान हैं। जहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचकर धर्म लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारियों का तीर्थ भ्रमण

प्रा. डॉ. प्रकाशचंद पापडीवाल, औरंगाबाद

श्री अतिशय क्षेत्र पंचाळेश्वर क्षेत्र पर विराजमान भगवान पार्श्वनाथ भगवान की अतिशयकारी प्रतिमा

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल, तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई के विश्वस्त श्री प्रमोद कासलीवाल, उपाध्यक्ष श्री मनोज साहूजी, महामंत्री श्री भरत ठोले, कोषाध्यक्ष श्री विनोद लोहाड़े, मंत्री श्री केतन ठोले आदि पदाधिकारियों ने दिनांक 31/07/2021 एवं 01/08/2021 को महाराष्ट्र अंचल स्थित आंबेजोगाई, कारला, नाईचाकुर, सास्तुर, रामलिंग मुदगड, अतिशय क्षेत्र कुमठे, वडाला, सावरगांव काटी, अतिशय क्षेत्र तेर, सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरी, अतिशय क्षेत्र बीड़ आदि क्षेत्रों का दौरा कर निरिक्षण किया|

प्रथम अंबेजोगाई में भगवान विमलनाथ, पार्श्वनाथ के दर्शन करने के पश्चात वहां के विश्वस्त मंडल के साथ चर्चा की| उस समय भगवान के सामने के हॉल में लीकेज होने से और प्राचीन होने से उसे दुरुस्त करना एवं नया करना अति आवश्यक है ऐसा वहां के विश्वस्त गण एवं समाज ने बताया| कमेटी के पदाधिकारियों ने उसका अवलोकन किया| क्षेत्र के बाजू में ही 12500 स्क्वेअर फीट का प्लॉट खरीदा है जो अत्यंत उपयुक्त है, तथा मंगल कार्यालय क्षेत्र के पास है| अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल ने उन्हें बताया कि आप इस संबंध में अनुमान/आकलन और प्रस्ताव तीर्थक्षेत्र कमेटी को दें हम

अतिशय क्षेत्र पंचाळेश्वर पर विराजमान मनोकामना पूर्ण करने वाले पंच क्षेत्रपाल

उसे अंचल की बैठक में रखकर मंजूरी देकर मुंबई कार्यालय को भेजेंगे, और ज्यादा से ज्यादा अनुदान देने का प्रयास करेंगे| नरसिंहगढ़ में जो अभी-अभी यहां के युवक कार्यकर्ताओं ने कोरोना तालाबंदी (लॉकडाउन) के समय मे विकास किया है तथा जो आंबेजोगाई क्षेत्र के अंतर्गत है, उसका भी अवलोकन किया| उस समय श्री रत्नाकर कंगले, डॉ. नितीन धर्माराव, श्री शैलेष कंगले, श्री सुधीर महाजन, श्री देशमाने ढोले, श्री बेंडसुरे, डॉ. संदीप जैन, श्री अमोल कोंडेकर, श्री संजय विभूते आदि समाज बांधव उपस्थित थे|

तदुपरांत कमेटी पदाधिकारी कारला गांव में पहुंचे, जहां पर दिगंबर जैन भगवान पार्श्वनाथ की रत्नत्रय प्रतिमा का दर्शन, अवलोकन किया| इस प्राचीन प्रतिमा को श्वेताम्बर व्यक्तियों के द्वारा गांव को साथ लेकर प्राचीन मंदिर के बाहर कमरा बनाकर उसमें विराजमान किया है| कई जगह मूर्ति को क्षति पहुंची है| उस समय श्री शिखरचंदजी पहाड़िया, श्री संजय पापड़ीवाल, एवं समाज के कार्यकर्ताओं ने मुंबई मे मंत्रीगणों के साथ बैठक कर इस विषय को वहीं पर रोका गया था, जो आज भी वैसा ही है| दिगंबर जैन प्रतिमा अपने ही मूल रूप में है|

इसके पश्चात सभी कमेटी के पदाधिकारी नाईचाकुर पहुंचे| वहांपर भूकंप की वजह से नई जगह मंदिर बनवाकर प्राचीन प्रतिमाएं विराजमान की हैं तथा धर्मशाला का काम चल रहा है| मंदिर में जाग्रत क्षेत्रपाल हैं| धर्मशाला को पूर्ण करने हेतु कुछ फंड की आवश्यकता है| उस संबंध में तीर्थक्षेत्र कमेटी विचार करेगी ऐसा आश्वासन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल महामंत्री श्री भरत ठोले द्वारा दिया गया| उन्हे अभी १-१ लाख रुपये का दो बार तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा अनुदान दिया गया है| इस समय वहां के विश्वस्त पदाधिकारी श्री मतिसागर पाटील, श्री नेमीचंद आग्रे नाईचाकूर के अध्यक्ष श्री विजयकुमारजी जमालपुरे, श्री अनिल गोटे, श्री अजीत जमालपुर, श्री बाबूराव पंडित, श्री सचिन काकंबे आदी से चर्चा हुई| क्षेत्र को वास्तु के अनुसार में किस पद्धति से करते आएगा इस संबंध में भी वास्तुशास्त्र का

मार्गदर्शन लेने हेतु क्षेत्र कमेटी द्वारा सुझाव दिया गया|

अतिशय क्षेत्र रामलिंग मुदगड पर अतिशयकारी खड़्गासन पार्श्वनाथ भगवान की 5-6 फीट उंची प्रतिमा एक छोटे कक्ष में विराजमान है| यहां पर समाज का एक भी घर नहीं है| श्री मतिसागर पाटिल और कार्यकर्ताओं ने उस जगह को कंपाउंड बनाया है| इस मंदिर के पीछे जगह है उसमें साधुसंत, पुजारी के लिए दो- तीन कक्ष बनाना अति आवश्यक है, ताकि यहां पर निवास हो सके, पूजन अर्चन व्यवस्थित हो सके| इस मंदिर के सामने के मार्बल के पत्थर आदि गिर रहे हैं| इस क्षेत्र को और अनुदान देकर तुरंत इसका संरक्षण, संवर्धन करना आवश्यक है| तीर्थक्षेत्र कमेटी इस संबंध में तुरंत योग्य कारवाई करेगी ऐसा कमेटी पदाधिकारी द्वारा आश्वासित किया गया| इसके पूर्व इस क्षेत्र को १-१ लाख का दो बार अनुदान दिया है|

कमेटी के पदाधिकारी दिगंबर जैन मंदिर सास्तूर पहुंचे वहाँपर क्षेत्र के अध्यक्ष सरपंच श्री यशवंत कासट एवं समाज बांधव से क्षेत्र विकास पर चर्चा की|

इसके पश्चात अतिशयकारी विघ्नहर पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन करने हेतु पदाधिकारीगण आष्टाकासार पहुंचे| वहां पर सचिव श्री जिनेंद्रजी जैन पाटील, श्री रमेश पंडित से भेंट हुई| समाज के लोग भी वहां पर उपस्थित थे| यहाँ पर विराजमान अतिशयकारी पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन को हर अमावस्या को भक्तगण आते हैं| हर अमावस्या को आये हुए दर्शनार्थियों को भंडारा देने हेतु 2036 तक भक्तजनों ने पहले से ही बुकिंग कर रखी है, इतनी श्रद्धा समाज की है| सभी पदाधिकारियों ने दर्शन कर क्षेत्रभ्रमण किया| क्षेत्र में पंडित परिवार की जो जगह है उसको लेकर शीघ्रताशीघ्र वहां निर्माण कार्य किया जाएगा ऐसा आश्वासन श्री जिनेंद्रजी ने दिया| क्षेत्र के नए बने हुए कमरे, भोजन हॉल, रसोई का निरीक्षण किया| यहां पर भी यात्री सुविधा करना आवश्यक है|

उसके पश्चात सोलापुर में महाराष्ट्र अंचल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अनिलजी जमगे इनके निवास पर पदाधिकारियों ने चर्चा की| तदुपरांत सभी कुमठा अतिशय क्षेत्र के लिए रवाना हुए| साथ मे श्री महावीरजी शास्त्री, श्री महावीर शाह, सोलापुर वालचंद महाविद्यालय के प्राचार्य श्री संतोषजी कोटे,

अतिशय क्षेत्र पंचाळेश्वर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारीगण राष्ट्रीय ट्रस्टी प्रमोद कासलीवाल, पंचाळेश्वर अतिशय क्षेत्र के अध्यक्ष श्रीपालचंदजी गंगवाल, महामंत्री श्री भाऊसाहेब बाकलीवाल, डॉ. राजेंद्र काला, श्री विजय पापडीवाल, श्री विलास पहाडे, श्री अजित काला आदि

अतिशय क्षेत्र पैठण पर दीप प्रज्वलन करते हुये

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पैठण पर चतुर्थ कालीन अतिशयकारी वालुकामय भगवान मुनिसुव्रतनाथ का दर्शन करते हुये तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापडीवाल, तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय ट्रस्टी श्री प्रमोद कासलीवाल, महाराष्ट्र अंचल के उपाध्यक्ष श्री मनोज साहुजी, महामंत्री श्री भरत ठोळे, कोषाध्यक्ष श्री विनोद लोहाडे, मंत्री श्री केतन ठोळे, श्री किशोर भाकरे, श्री प्रवीण लोहाडे अतिशय क्षेत्र पैठण के अध्यक्ष श्री महावीर बड़जाते, महामंत्री श्री विलास पहाडे, कोषाध्यक्ष श्री विजय पापडीवाल, विश्वस्त श्री कैलास पाटणी, डॉ. संजय गंगवाल, श्री अभिजित काला, डॉ. राजेंद्र काला, श्री सुमित गंगवाल, श्री स्वदेश पांडे आदि छायाचित्र में दिख रहे हैं।

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पैठण द्वारा तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापडीवाल तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय श्री ट्रस्टी प्रमोद कासलीवाल महाराष्ट्र अंचल के उपाध्यक्ष श्री मनोज साहुजी, श्री महावीर बडजाते, श्री महामंत्री भरत ठोळे, कोषाध्यक्ष श्री विनोद लोहाडे, मंत्री श्री केतन ठोळे, श्री किशोर भाकरे, श्री प्रवीण लोहाडे का सन्मान पैठण अतिशय क्षेत्र के अध्यक्ष श्री महावीर बडजाते, महामंत्री श्री विलास पहाडे, कोषाध्यक्ष श्री विजय पापडीवाल, विश्वस्त श्री कैलास पाटणी, डॉ. संजय गंगवाल, श्री अभिजित काला, डॉ. राजेंद्र काला, श्री सुमित गंगवाल, श्री स्वदेश पांडे इन्होने किया।

अतिशय क्षेत्र केसापुरी कल्पतरू पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर दर्शनार्थ उपस्थित तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारीगण

अतिशय क्षेत्र केसापुरी पर क्षेत्र विकास संबंधी चर्चा करते हुये समस्त पदाधिकारीगण

अतिशय क्षेत्र केसापुरी पर तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष संजय पापडीवाल का सन्मान करते हुये क्षेत्र के प्रतिनिधि साथ मे तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के महामंत्री

कारला मे विराजमान रत्नत्रय पार्श्वनाथ भगवान
के दर्शन करते हुये महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारी

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र रामलिंग मुदगड
पर भगवान पार्श्वनाथ का दर्शन करते हुये

श्री रविंद्रजी कटके, सन्मति सेवा के संस्थापक श्री मिहिरजी गांधी जो तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के मंत्री है| उनके साथ श्री वीरकुमार दोशी (अध्यक्ष, सन्मति सेवा दल), सम्यक जैन पत्रकार, नमन जैन आदि लोग फलटन अकलुज विभाग से तीर्थक्षेत्र कमेटी के इस दौरे में शामिल हुए थे | अतिशय क्षेत्र कुमठे मे ट्रस्ट व समाज द्वारा पुष्पवृष्टि, रंगोली निकाल कर भव्य स्वागत किया गया| वहां पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री संजय पापडीवाल, श्री प्रमोद कासलीवाल तथा सभी पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ववलन किया गया| यहाँ पर क्षेत्र अध्यक्ष श्री श्यामजी पाटिल, महामंत्री श्री वालचंदजी पाटिल, श्री वीरेश पांढरे आदि लोगों ने कमेटी का स्वागत किया| महावीरजी शास्त्री ने प्रास्ताविक कर क्षेत्र के संबंध में मालूमात दी| क्षेत्र पर विकास कार्य चल रहा है, बड़े हॉल का निर्माण मंदिर में हो रहा है| क्षेत्र के पास बाजू में लगकर जमीन है उसमें संत निवास आदि व्यवस्था होना आवश्यक है| तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी पदाधिकारियों ने उसका अवलोकन किया| मंदिर के ऊपर जाकर शिखर का अवलोकन किया यहां पर श्री महावीरजी शास्त्री ने बताया मंदिर के जीर्णोद्धार में समाज का हर व्यक्ति अपनी सेवा देता है| स्वयं आकर मजदूरी का काम करता है |

टेक्निकल को छोड़कर लगभग तीन से चार लाख की मजदूरी इस प्रकार की नहीं लगी है| समाज ने अपनी सेवा दी है यह अत्यंत सराहनीय है| अपने उद्बोधन में श्री संजय पापडीवाल ने उनके क्षेत्र को विकास कार्य के लिए निधि कम नहीं पड़ेगी ऐसा आश्वासन दिया| पूरे भारत देश में सेवा देने वाला ऐसा समाज नहीं होगा, ऐसा अपने उद्बोधन में उन्होंने बताया| ऐसी समाज को तीर्थक्षेत्र कमेटी नमन करती है ऐसी भावना व्यक्त की |

इसके पश्चात पदाधिकारी वडाला अतिशय क्षेत्र पहुंचे वहां पर भगवान जी का अभिषेक देखा| वडाला क्षेत्रों में भी कोई दिगंबर जैन घर नहीं है| आसपास के लोग आकर क्षेत्र को संभालते हैं| क्षेत्र पर एक भी कमरा साधु-संतों के लिए नहीं है| इस संदर्भ में वहां की सौ. अश्विनी माहेरे ने बताया कि हमें चौका लगाना है तो किसी के घर में जाकर लगाना पड़ता है, इसमे बहुत परेशानी होती है| यह सुनकर तीर्थक्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल ने उपस्थित पदाधिकारियों को आवाहन किया| तुरंत ही श्री संजय पापडीवाल, श्री मीहीरजी गांधी, श्री प्रमोद कासलीवाल, श्री वीरकुमार दोशी, श्री विनोद लोहाडे स्वयं उस महिला ने भी अपने ओर से भी दान राशि घोषित की |
सब मिलाकर लगभग रु. 1,00,000 की राशि स्वीकृति हुई| वहां पर जमा हुयी राशि वडाला के विश्वस्त श्री महावीर जी शास्त्री को सुपुर्द की गई | तीर्थक्षेत्र कमेटी के ओर से रु. 2,00,000 का प्रस्ताव वडाला अतिशय क्षेत्र के लिये वरिष्ठ कार्यालय को भेजा है| उसे शीघ्र स्वीकृत करा कर यह राशि क्षेत्र को भेजी जाएगी ऐसी जानकारी कोषाध्यक्ष श्री विनोदजी लोहाडे ने दी | वडाला क्षेत्र को रु. 1,00,000 का अनुदान कुछ दिन पहले कमेटी द्वारा दिया गया था |

तत्पश्चात तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी पदाधिकारी सावरगांव काठी अतिशय क्षेत्र पर पहुंचे| वहां पर मनोज्ञ अतिशयकारी तीनों समय अपना रूप

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कुमठे (सोलापूर) में
एकत्रित समस्त पदाधिकारिगण

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र आंबेजोगाई मे
विमलनाथ भगवान के दर्शन करते हुये

दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र वडाला में क्षेत्र की जमीनपर क्षेत्र का बोर्ड लगाते हुये तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल एवं वडाला क्षेत्र के पदाधिकारिगण

दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सावरगाव काटी मे निर्माणाधिन
धर्मशाळा का अवलोकन करते हुये

दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र आष्टाकासार के सचिव श्री जिनेन्द्र पाटील, श्री मतिसागर पाटील, श्री नेमीचंद्र आग्रे, श्री रमेश पंडित, तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल अध्यक्ष श्री संजय पापडीवाल को तीर्थ जीर्णोद्धार अनुदान मिलने हेतु निवेदन देते हुये साथ मे तीर्थक्षेत्र कमेटी के विश्वस्त श्री प्रमोद कासलीवाल, महामंत्री श्री भरत ठोळे, उपाध्यक्ष श्री मनोज साहुजी, कोषाध्यक्ष श्री विनोद लोहाडे दिख रहे है।

दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सावरगाव काटी मे शिखर मे विराजमान अंतरीक्ष नेमीनाथ भगवान क दर्शन करते हुये

बदलने वाली भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है| अंतरिक्ष नेमिनाथ भगवान के दर्शन किए | वहां की स्वच्छता, व्यवस्था अति सुंदर है, जिसको तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सहारा गया | क्षेत्र पर चल रहे विशाल धर्मशाला निर्माण का भी अवलोकन किया | तीर्थक्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल ने बताया कि सभी तीर्थक्षेत्र के विश्वस्तो को यहाँ की व्यवस्था के बारे में बताना चाहिए, ताकि हमारे सब क्षेत्र अच्छी तरह से प्रगति करें| क्षेत्र के अध्यक्ष सप्तम प्रतिमा धारी श्री वज्रकुमारजी मेहता, महामंत्री श्री पदमकुमार मेहता, विश्वस्त मंडल श्री भामंडल मेहता, श्री वैभव मेहता, श्री प्रफुल्ल मेहता, डॉ. आदर्श मेहता, डॉक्टर आनंद मेहता, श्री रविकिरण मेहता, श्री सुभाषचंद गांधी मैनेजर सभी ने तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारियों का स्वागत सम्मान किया| महामंत्री श्री प्रमोद कुमार एवं डॉ. आदर्श मेहता ने बताया कि क्षेत्रों को पूर्व में तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा रु. 25,00,000 का अनुदान मंजूर हुआ था| जिसमें के रु. 7,50,000 उन्हें प्राप्त हुए हैं | और एक रु. 5,00,000 का चेक क्षेत्र को दिया गया था किन्तु सम्मेद शिखरजी की केस के लिए पैसा तीर्थक्षेत्र कमेटी को कम ना पड़े इसलिए उस रु. 5,00,000 के चेक को रोक दिया गया था| उसके पश्चात अभी तक तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से अनुदान की रकम नहीं मिली है| क्षेत्र पर धर्मशाला का काम चल रहा है उसे निधि की अत्यंत आवश्यकता है| उन्होंने श्री प्रमोदजी कासलीवाल के अध्क्षीय काल में मंजूर हुई अनुदान की रकम जल्द से से जल्द मिले ऐसी मांग की | श्री प्रमोद कासलीवाल भी साथ में ही थे उन्होंने बताया कि इस संदर्भ में महाराष्ट्र अंचल को इसकी मालूमात लेकर रकम दिलाने का पूरा प्रयास करेंगी | क्षेत्र पर चल रहे काम के लिये निधि की आवश्यकता है |

वहाँ से तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी अतिशय क्षेत्र तेर आये वहां पर क्षेत्र की ओर से पुजारी ही थे| उन्होंने क्षेत्र के बारे में बताया|

उसके बाद तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरी पर पहुंचे सिद्धक्षेत्र की ओर से प्रतिमाधारी आदरणीय श्री वालचंदकाका ने सभी का स्वागत किया | श्री वालचंदकाका से चर्चा करते हुए तीर्थक्षेत्र महाराष्ट्र अंचल के मंत्री श्री मिहिरभाई गांधी ने बताया कि निजामकाल मे कुंथलगिरी अहिंसा क्षेत्र था | उस समय के शिलालेख हमारे पास क्षेत्र परिसर में रखे हैं| कमेटी ने सुझाव दिया की उसे, मुख्य जगह पर लगाये जाएँ ताकि यह इतिहास के दर्शनार्थी देखें | इस सूचना को आदरणीय श्री वालचंदकाका ने सहर्ष स्वीकृत किया | यह शिलालेख के प्राचीन पत्थर मुख्य द्वार पर लगाए जाएंगे| इसके लिए चबूतरे की भी जरूरत होगी तो निर्माण किया जाएगा ऐसा आश्वासन दिया | उन्होंने यह भी बताया कि सरकार के पास अहिंसा स्थल घोषित करने हेतु सिद्धक्षेत्र की ओर से कारवाई चल रही है, उसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी अपना सहयोग प्रदान करें| संजय पापड़ीवाल ने उन्हें आश्वासन दिया कि आप यह प्रस्ताव महाराष्ट्र अंचल कमेटी के पास भेजें, हम इस प्रस्ताव में सरकार मे जो भी मदद कर सकेंगे, वह करेंगे | सन्मति दल के अध्यक्ष श्री वीरकुमार गांधी ने भी बताया कि हम भी इसमें सहयोग करेंगे |

बीड अतिशय क्षेत्र पर वासुपूज्य भगवान की आतिशय चमत्कारिक प्राचीन प्रतिमा विराजमान है इच्छापूर्ण पार्श्वनाथ भगवान की जो खंडित होकर पुनश्च जुड़ गई है ऐसी प्रतिमा भी है| भूगर्भ से प्राप्त इन प्रतिमाओं की जानकारी क्षेत्र द्वारा दी गयी| इसे अतिशय क्षेत्र का दर्जा देने हेतु वहाँ के अध्यक्ष श्री महावीरजी सेठी, श्री आशीष जैन, श्री चंद्रकांत खडके, श्री यतीन डोनगावकर, श्री संतोष संगवी, श्री संदीप काला, श्री वायकोस, पोफेसर काले आदि तथा सभी पदाधिकारियों ने विनंती की| अतिशय क्षेत्र द्वारा तीन मंदिरों का निर्माण हुआ है | एक मंदिर पद्मप्रभु भगवान का है | अत्यंत सुंदर विशालकाय मंदिर का अभी निर्माण किया गया है | यहां पर क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने सभी कमेटी पदाधिकारियों का स्वागत किया| तीर्थक्षेत्र कमेटी ने उन्हें भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को संलग्नता फॉर्म भर कर देने को कहा | जब भी वह प्रस्ताव कमेटी के पास देंगे, कमेटी उसे वरिष्ठ कार्यालय को भेजेगी ऐसा आश्वासन अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल ने दिया | इस संबंध मे मंत्री श्री केतनजी ठोले इनसे कागजपत्र पूर्ति संबंध मे संपर्क आप कर सकते है |

इस प्रकार 11 क्षेत्रों का दौरा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल द्वारा किया गया| महाराष्ट्र अंचल थोड़े ही दिनों में महाराष्ट्र के अन्य सभी क्षेत्रों का दौरा करने वाली है, ऐसा अध्यक्ष श्री संजय पपड़ीवाल एवं महामंत्री श्री भरत ठोले ने बताया|

कर्नाटक के बेलगाम के कोथली ग्राम पर हुई आचार्य १०८ श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज के चातुर्मास की स्थापना, मनाई गई गुरु पूर्णिमा तथा वीर शासन जयंती

भारत वसुन्धरा के दक्षिण पश्चिम भाग में स्थित बेलगांव जिला, जिसे वर्तमान काल के बीसवीं सदी और इकीसवीं सदी के अनेकानेक महान दिगंबर आचार्यों और मुनियों को जन्म देने का गौरव प्राप्त हुआ है, ऐसे बेलगांव जिले को वर्ष २०२१ के आचार्य श्री १०८ श्री शान्तिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री १०८ श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज ससंघ के ५३ वें वर्षायोग सम्पन्न कराने का गौरव प्राप्त हुआ है।

कर्नाटक के बेलगांव की इसी पावन भूमि पर बेलगांव विमानतल से 80 किमी और कोल्हापुर विमानतल से 40 किमी दूर, महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित है अति मनोहारी क्षेत्र कोथली, जिसे बीसवीं सदी के महान **आचार्यरत्न भारत गौरव १०८ श्री देशभूषण जी महाराज** की जन्म स्थली, तपस्थली और समाधी स्थली होने का गौरव प्राप्त है।

एक तरफ जहाँ **आचार्य रत्न देशभूषण जी महाराज** की संयम और तपस्या के प्रभाव से इस धरती का कण कण आध्यात्मिक ऊर्जा को प्राप्त है वहीं दूसरी तरफ इसके चारों ओर अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य मानो सचमुच में ये धरती सम्पूर्ण भारत देश का भूषण कहलाने लायक है। इसके प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर लगता है मानों देवताओं ने स्वयं इसे अपने हाथों से अपने निवास के लिए ही बसाया हो और जैसे सचमुच में ये स्थली प्राकृतिक सौंदर्य की एक कोथली (पोटली) ही हो, जिसकी सुरम्यता और रमणीयता देखते ही बनती है। छोटे छोटे टीले, पहाड़ और उनपर चारों तरफ घनी हरियाली , मंद-मंद ठंडी हवा के साथ बादलों का घुमड़-घुमड़ कर आना और फिर हल्की-हल्की धूप के बीच रिमझिम फुहारें और उन पर बनता इंद्रधनुष मानो संकेत दे रहा हो की स्वर्ग से इंद्र स्वयं यहाँ आये हैं। और इन सबके बीच कोयल की मीठी राग के साथ छम-छम नाचता मोर भारत देश के इस भूषण को गौरव प्रदान करता है। एक तरफ पहाड़ी पर आकाश को छूती भगवान शांतिनाथ(21 फुट) , चन्द्रप्रभु और महावीर भगवान (19फुट) की भव्य खड्गासन प्रतिमाएं तो दूसरी तरफ व्यवस्थित वर्णो की नवग्रह अरिष्ट निवारक तीर्थंकरों की भव्य पद्मासन प्रतिमाएं और ॐ, नवदेवता, पंचपरमेष्ठी के साथ विदेह क्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएं। इन्हीं के मध्य भव्य काले पाषाण की विघ्नहरण भगवान् पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा जिसके दर्शन मात्र से भक्तों के हर विघ्न दूर हो जाते हैं और उनके जीवन की कालिमा दूर हो जाती है। पहाड़ी पर ही स्थित रत्नमई प्रतिमाओं से युक्त भव्य जिनालय जिसमे लगभग 91 रत्नमई अद्भुत प्रतिमाएं। आदिनाथ भगवान्, भरत और बाहुबली स्वामी की भव्य खड्गासन प्रतिमाएं और इनके साथ भगवान् पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा और भव्य नंदीश्वर द्वीप और समवशरण जिनालय। पहाड़ की तलहटी पर आचार्य रत्न देशभूषण जी महाराज की समाधि स्थली। कहते हैं कि इस समाधि स्थली के दर्शन से भक्तों की हर मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती है। और आचार्य श्री वरदत्त सागरजी महाराज की समाधि स्थली। इसी के साथ क्षेत्र पर विराजमान 108 श्री महिमासागर जी और 105 आर्यिका श्री सरस्वती माताजी सहित कुल 38 मुनि आर्यिकाओं के विशाल संघ सहित आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी, मानो संपूर्ण दृश्य को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि तीर्थंकर प्रभु का साक्षात् समवशरण ही आया हो।

ऐसे मनोहारी क्षेत्र को अपनी पद रज से पवित्र करने वाले पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि 108 आचार्य श्री वर्धमानसागर जी का कोथली प्रांत में प्रथम वर्षायोग सम्पन्न हो रहा है।

चातुर्मास स्थापना

23 जुलाई २०२१ को स्थापना समारोह के पूर्व प्रातः काल सिद्धों के गुणों के स्मरण नमन हेतु चल रहे सिद्धचक्र महामंडल विधान के 1024 अर्घ समर्पण किये गए। एक तरफ तो उन सिद्ध प्रभु की भक्ति जो सिद्धालय में विराजमान हो चुके थे और दूसरी तरफ उन आचार्य भगवन की भक्ति जो सिद्धालय जाने के पथ पर आरूढ़ थे। तत्पश्चात् स्थापना कार्यक्रम का प्रारंभ दोपहर के लगभग

12.30 बजे से हुआ। मंद-मंद चलती पवन और उसके साथ इंद्रों के द्वारा किये जा रहे जलाभिषेक के मध्य ध्वजारोहण प. श्री कुमुद जी सोनी के निर्देशन में इचलकरंजी के श्रेष्ठी श्री राजेश जी दोशी ने किया। तत्पश्चात् ४.१५ बजे आचार्य संघ का सभा मंडप में मंगल पदार्पण हुआ।

कोरोना प्रोटोकॉल के मध्य प्रशासनिक निर्देशों का पालन करते हुए बंगाल, राजस्थान , महाराष्ट्र , कर्णाटक , आसाम, मध्यप्रदेश , छत्तीसगढ़ और भारत के अन्य क्षेत्रों से विशिष्ट जनों से सुशोभित सभा मंडप विविधता में एकता का सन्देश दे रहा था।

प.कुमुद जी सोनी ने मंगलाचरण किया और कोथली की छोटी सी बालिका ब्रह्मीला शांतिनाथ ने मंगल गान किया। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज के चित्र का अनावरण कोलकाता के श्रेष्ठि श्री प्रकाश चंद जी सरला देवी पाटनी परिवार ने किया और दीप प्रज्वलन गुवाहाटी के श्री राजेंद्र जी सुमन छाबड़ा ने किया।

समस्त पूर्वाचार्यो को अर्घ समर्पण करने के पश्चात आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य किशनगढ़ के अनन्य भक्त श्रेष्ठी श्री पारसमल जी राजेश कुमार जी पांड्या परिवार ने प्राप्त किया और दूध से पाद प्रक्षालन का सौभाग्य किशनगढ़ के अनन्य भक्त श्रेष्ठी श्री राज कुमार जी दोशी ने प्राप्त किया। आचार्य श्री को शास्त्र भेंट करने का पुण्यार्जन जयपुर के श्रेष्ठि श्री पूनम चंद जी शाह ने किया। शास्त्रभेंट श्रीमती तारा देवी सेठी ने किया।

तत्पश्चात् स्थानीय समिति द्वारा आचार्य संघ के चरणों में चातुर्मास करने हेतु निवेदन किया गया। इस अवसर पर कृतज्ञता ज्ञापन स्वरुप आचार्य श्री की भव्य पूजन की गई। आचार्य श्री की पूजन का सौभग्य अर्जित किया किशनगढ़ के श्रेष्ठी श्री राज कुमार जी दोशी ने। श्री अजय जी पंचोलिया इंदौर और सरला देवी पाटनी ने अपने सुमधुर कंठ से आचार्य श्री की पूजन उच्चारण की। संघस्थ तारा देवी सेठी ने चातुर्मास स्थापना पर एक सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। पूजन के पश्चात् अवसर आया आचार्य श्री के आशीर्वचन का, क्षेत्र पर चातुर्मास स्थापना की स्वीकृति प्रदान करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि महिमा सागर जी और सरस्वती मति माताजी का कई समय से इस क्षेत्र पर चातुर्मास करवाने का मन था और परम पूज्य आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज की इस पावन भूमि के प्रशस्त वातावरण में संघ को साधना का अपूर्व अवसर प्राप्त होगा। और इसी प्रशस्त वातावरण को देखते हुए संघ के आर्यिका श्री शीतलमति माताजी,आर्यिका श्री चैत्यमति माताजी, आर्यिका श्री विनम्र मति माताजी और क्षुल्लक श्री विशाल सागर जी महाराज के साथ ब्र. दीप्ती दीदी और अंजू बहन ने उत्कृष्ट अठाई व्रत को धारण किया है। साथ ही 5 आर्यिका माताओं ने कोमली अठाइ के व्रत को धारण किया है।

अद्भुत दृश्य

जैसे ही आचार्य श्री ने चातुर्मास स्थापना विधि पूर्ण की मानो कोथली स्थित मानव ही नहीं प्रकृति का मन भी नाच उठा। मंद मंद बहती पवन के साथ रिमझिम बरसती वर्षा में मोर नाच उठे। संघ द्वारा चातुर्मास स्थापना हेतु भक्तियों का पाठ किया गया। और फिर अवसर आया चातुर्मास के कलश स्थापना का जिसका सौभाग्य प्राप्त किया दानवीर श्रेष्ठी कोलकाता (हावड़ा) के श्री प्रकाश चंद जी आदित्य, मनन, रचित पाटनी परिवार ने। आचार्य संघ के आगे कलश लेकर प्रकाश चंद जी सरला देवी पाटनी चल रहे थे एवं आचार्य श्री के आशीर्वाद से तथा मुनि श्री हितेंद्र सागर जी के मार्गदर्शन में चातुर्मास कलश की स्थापना की गई। तत्पश्चात आचार्य श्री की आरती सम्पन्न हुई।

गुरु पूर्णिमा और वीर शासन जयंती

24 जुलाई का दिन था गुरु पूर्णिमा और वीर शासन जयंती के संयुक्त शुभ अवसर का, अवसर था गुरुओं के प्रति विनय तथा भक्ति का एक ऐसा दिवस जिस दिन इंद्रभूति को महान गुरु भगवान महावीर स्वामी मिले और हम सबको गौतम स्वामी जैसे महागुरु। प्रातःकाल कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। प्रतिष्ठाचार्य श्री कुमुद जी सोनी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया तत्पश्चात महावीर स्वामी, गौतम स्वामी एवं समस्त पूर्वाचार्यो को अर्घ समर्पित किया गया। किशनगढ़ के श्रेष्ठी श्री विजय जी कासलीवाल परिवार द्वारा जल से तथा उपस्थित भक्तों द्वारा पंचामृत से आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन किये गये। सौम्य वातावरण में जहां भक्तगण आचार्य गुरु की पाद प्रक्षालन करके अपने कर्मों का क्षालन कर रहे थे वहीँ दूसरी तरफ भक्तों पर मन्द मन्द मुस्कान उड़ेलते हुए आचार्य श्री आशीर्वाद प्रदान कर रहे थे।और फिर अति उत्साह के साथ गुवाहाटी के श्री किशोर जी काला परिवार द्वारा तथा उपस्थित भक्तों द्वारा आचार्य श्री की भव्य पूजन की गई। आचार्य श्री ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि जीवन में गुरु का होना अत्यंत आवश्यक है तथा आज ही के दिन गौतम स्वामी के द्वारा हमें गुरु की महत्ता का पता चला। आचार्य श्री ने कहा कि गुरु की संगति से संतोष प्राप्त होता है और उसी शक्ति से व्यक्ति मुक्ति पथ पर अग्रसर होता है।

आचार्य श्री ने वीर शासन जयंती की महत्ता बताते हुए कहा कि वर्तमान शासन नायक भगवान् श्री महावीर स्वामी की वाणी समवशरण में 66 दिन बाद आज ही के दिन खिरी और गौतम स्वामी ने उसे झेला और भगवान महावीर स्वामी का शासन 84000 वर्ष तक चलेगा। आज ही के दिन सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन की ओर गमन करना प्रारम्भ करता है। तत्पश्चात गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर गुरु अर्चन कलश की मंगल स्थापना की गई। गुरु अर्चन कलश स्थापना का पुण्यार्जन किया गुवाहाटी के श्रीमती मणि बाई, भागचंद जी, राजेन्द्र जी सुमन छाबड़ा एवं सेलम के श्री सरोज जी सुनीता जी बगड़ा परिवार ने। आचार्य श्री के आशीर्वाद से गुरु अर्चन कलश स्थापना श्री राजेन्द्र जी सुमन जी छाबड़ा ने की।

कोलकाता के राकेश सेठी ने मंच संचालन करते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में अशोक सेठी बंगलोर, पारस जी इचलकरंजी, बेलगांव के राजू जी कट्टगन्नावर, राजू जी जक्कन्नावर, पुष्पक जी हनमन्नावर, कोलकाता (हावड़ा) के बाबूलाल जी पाटनी, इंदौर के श्री समर कंथली, विशाल जी आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

कर्नाटक के बेल्लारी जिले के बालकुंडी गाँव में जेसीबी से खुदाई के दौरान मिली जैन प्रतिमाएं एवं शिलालेख

कर्नाटक के बेल्लारी जिला, सिरुगुप्पा तालुका के बालकुंडी (बालाकुंड) गांव पहले जैनों का प्रसिद्ध स्थान था| स्थानीय हाई स्कूल के अध्यापक श्री चन्द्रमौली जी ने बताया कि शिलालेख में लिखा है कि आचार्य श्री कुंद-कुंद भगवान इसी गाँव में आये थे और गाँव के निकट पूरा पहाड़ है| पहाड़ के ऊपर आचार्य श्री कुंद-कुंद जी के चरण चिन्ह हैं तथा गाँव में स्कूल के पास खंडित तीर्थंकर प्रतिमा भी हैं| गत दिनों पहले पहाड़ के पीछे खेत में जेसीबी से चल रही खुदाई के समय ५ काले पत्थर मिले हैं जिसके ऊपर मूर्तियाँ बनी हुई है और शिलालेख भी हैं| ये मूर्तियाँ बहुत प्राचीन हैं गाँव के आस-पास खुदाई में मूर्तियाँ मिलती रहती हैं| स्कूल के अध्यापकजी ने बताया कि पहले ये जैनों की राजधानी हुआ करती थी| जो कि आज की स्थिति में चिंतनीय है| खुदाई में प्राप्त सभी मूर्तियों को एक जगह लाने के लिए अध्यापक श्री चंद्रमौलीजी प्रयत्न कर रहे हैं इस कार्य के लिए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भी प्रयत्नरत है|

विधायक संजय शर्मा ने आचार्यश्री के समक्ष 21 लाख रुपये दान किये

तेंदूखेड़ा विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक श्री संजय शर्मा ने जबलपुर के तिलबारा घाट क्षेत्र में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की प्रेरणा से बनाये जा रहे विश्वस्तरीय आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र के लिए 21 लाख रुपये की राशि का दान किया। विधायक श्री शर्मा द्वारा यह दान आचार्यश्री के 54वें दीक्षा दिवस एवं तेंदूखेड़ा विधानसभा क्षेत्र के बोहानी ग्राम में उनके चरणकमल पड़ते समय उनसे आशीर्वाद ग्रहण करते हुए घोषित किये गये। मंगल आशीर्वाद ग्रहण करने के साथ-साथ विधायक श्री शर्मा ने आचार्यश्री को राजमार्ग स्थित चिंतामणि परसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में ससंघ पधारने का भी निवेदन किया।

"जैन धर्म-दर्शन की प्रासंगिकता" पुस्तक का विमोचन

जैन दर्शन के सिद्धांत राष्ट्र निर्माण के लिए अतुलनीय: महेन्द्र पाटनी

स्थानीय श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर के प्रवचन सभागार में "जैन धर्म तथा दर्शन की प्रासंगिकता" पुस्तक का विमोचन दिनांक 24.07.2021, शनिवार को दिगम्बर जैन समाज, लाडनूं के अध्यक्ष श्री सुरेश कासलीवाल एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता उद्योगपति सी.ए. महेन्द्र पाटनी, लाडनूं-निवासी, कोलकाता-प्रवासी श्रावकश्रेष्ठी श्री नरेंद्र बाकलीवाल, कोलकाता एवं जैन दर्शन के मनीषी डॉ. सुरेन्द्र जैन, लाडनूं द्वारा किया गया। पुस्तक की संपादिका डॉ. मनीषा जैन ने पुस्तक का परिचय देते हुए कहा कि उक्त पुस्तक में विषयांतर्गत देश के वरिष्ठ विद्वानों के आलेखों को उक्त पुस्तक में समाहित एवं संकलित कर किया है। जिसे क्रमशः पांच खण्डों में दर्शन, आचार, समाज और संस्कृति, जैन दर्शन और विज्ञान एवं जैन दर्शन और स्वास्थ्य में विभक्त किया है।

पुस्तक विमोचन कर्ता सी.ए. महेन्द्र पाटनी ने कहा कि उक्त पुस्तक में लगभग सभी प्रासंगिक विषयों को समाहित कर कुशल संपादन किया है। डॉ. मनीषा जैन उक्त पुस्तक के संपादन के लिए बधाई की पात्र हैं। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन के सिद्धांत राष्ट्र निर्माण के लिए अतुलनीय है, बशर्ते इन सिद्धांतों को अंगीकार किया जाए। चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण एवं सवस्थ्य समाज के निर्माण में जैन सिद्धांतों की महती आवश्यकता है। जैसे अहिंसा, शाकाहार, अनेकांतवाद, अपरिग्रहवाद और स्यादवाद आदि हैं।

अध्यक्ष श्री सुरेश कासलीवाल ने कहा कि जैन विद्वानों को जैन समाज के बहुमूल्य सिद्धांतों को निःस्वार्थ भाव से प्रचारित एवं प्रसारित करने की आवश्यकता है। युवा वर्ग को बताना होगा कि द्वादशांग जिनवाणी

सामाजिक बुराइयों को समाप्त कर मोक्षमार्ग प्रशस्त करती है। वहीं जैन दर्शन के मनीषी डॉ. सुरेंद्र जैन ने कहा कि शाकाहार, रात्रि भोजन त्याग, संयमित जीवनशैली और अपरिग्रह हमारे सुखद जीवन का आधार स्तंभ है। डॉ. मनीषा जैन द्वारा किया गया यह संपादन कार्य शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

तदुपरांत पाटनी परिवार, कोलकाता द्वारा धर्मनिष्ठ स्व. श्री हुक्मीचंद एवं स्व. श्रीमती छागनीदेवी पाटनी की स्मृति में सी.ए. महेन्द्र पाटनी ने पुस्तक के कुशल सम्पादन के लिए डॉ. मनीषा जैन को 11,000 हजार रुपए की नगद राशि, प्रशस्ति पत्र द्वारा पुरस्कृत किया। इस अवसर पर श्री महेन्द्र सेठी, श्री सुभाष जैन, श्री सुशील बड़जात्या आदि ने पुस्तक की सराहना की।

तीर्थंकर के दीक्षा कल्याणक के लिए लौकांतिक देव अनुमोदना करने आये थे हम भी अन्तर्मना साधना की अनुमोदना करते हैं......श्रमणाचार्य विशुद्ध सागर जी चिदानंद तुम हो दयानंद तुम हो हमारे लिए तो श्री कुंद तुम हो.....अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर चातुर्मास स्थापना कार्यक्रम सम्पन्न ..सादगी से मनाया गुरु अवतरण दिवस

औरंगाबाद शिखरजी। आत्म साधक की साधना सम सिद्धि की साधना है सम की सिद्धि साधक की नीयत है पर सत्य है पुष्प किसी को गंध देता नही है स्वयं ही गंध मय होता है। पुष्प की सुंगंध भवरे अपने आप आ जाया करते है। ऐसे साधको की साधना से साधक अपनी साधना में तल्लीन है। यही कारण है की प्रसन्न सागर आचार्य अपनी तप साधना में तल्लीन है। तप साधना को देख कर शेर भी शांत हो जाता है। यह बात चातुर्मास स्थापना समारोह श्री सम्मेदशिखर झारखंड में विराजमान श्रमनाचार्य विशुद्ध सागर की महाराज ने अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज की तब साधना की अनुमोदना करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि जब तीर्थंकर के दीक्षा कल्याणक के लिए लौकांतिक देव अनुमोदना करने आये थे तो हम भी हम भी अन्तर्मना की साधना की अनुमोदना करते है। एक साधक की साधना में किंचित मात्र भी विकल्प नही आना चाहिए। यही आप सब लोगो से निवेदन है।

इसी तारतम्य में अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज ने कहा कि इस वर्ष मेरा पूण्य कहो सिद्ध भूमि का मेरी साधना अतिशय का की मेरी साधना के दरम्यान मुझे बड़े-बड़े साधको का आशीष मिल रहा है।

जानकारी देते हुए प्रवक्ता श्री रोमिल जैन पीयूष कासलीवाल, श्री नरेंद्र अजमेरा ने बताया कि जैन जगत में पहली बार कलश स्थापना नही हुई बल्कि चातुर्मास की स्थापना सिद्ध भक्ति का पाठ पड़कर की गई। जहाँ गुरुदेव केशलोचन भी किया। जहाँ अन्तर्मना गुरुदेव व सौम्य मूर्ति पियुष सागर जी महाराज जी संघ के साथ श्रमनाचार्य विशुद्ध सागर महाराज ससंघ, बालाचार्य मोक्ष सागर जी महाराज, उपाध्याय वीप्रनत सागर जी महाराज एवं चैतन्य मति माताजी, श्रुत मति माताजी मौजूद थे। इस अवसर पर भक्तो ने अपने चहेते गुरुदेव अन्तर्मना आचार्य श्री का अवतरण दिवस सादगी से मनाया व गुरुपूर्णिमा पर गुरु आशीष प्राप्त किया। इधर पीयूष सागर जी महाराज ने गुरूदेव की 557 दिन की साधना के बारे में बताते हुए सभी भक्तों से कहा की आप सभी गुरुजी के साधनाकाल तक महामंत्र णमोकार का प्रति महीने की 23 तारीख को सवा लाख जाप करें एवं प्रतिदिन गुरुनाम का सुमिरन करें एवं साधनाकाल तक गुस्सा नही करने का संकल्प ले। इस अवसर पर डॉ. संजय जैन, श्री बंटीचन्द्र प्रकाश बैद, श्री अशोक पाटनी बडायली, श्री विवेक गंगवाल, श्री आकाश जैन, श्री सजन जैन बंटी, श्री आलोक बाकलीवाल, श्री धीरेन जैन, श्री सुरेन्द्र जैन, श्री सन्दीप बड़जात्या, श्री शैलेश जैन गिरडीह, श्री सम्यक बाकलीवाल, श्री राहुल जैन, श्री विनीता जैन व चातुर्मास आयोजक समिति श्री दिगम्बर जैन बीस पंथी कोठी सम्मेद शिखर जी झारखंड के शिखरचंद पहाड़िया, श्री अजय जैन आरा पटना, श्री अशोक पंड्या गिरिडीह, श्री अरविंद रावजी दोसी मुम्बई, श्री सुरेश झांझरी कोडरमा, श्री प्रशान्त जैन आरा आदि उपस्थित थे।

सत्कर्म ही इंसान को भगवान बना देते हैं-आचार्य गुप्तिनंदी

औरंगाबाद। कचनेर उपरोक्त मार्गदर्शन उनके ही 49 वें जन्मोत्सव पर आये हुए अपार जनसमुदाय को आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी ने दिया।

औरंगाबाद जिले के श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ में आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव का 4 9 वाँ जन्मोत्सव परोपकार दिवस के रूप में मनाया गया। गुरू पूर्णिमा से ही भक्तों का भक्ति सागर उमड पडा। औरंगाबाद, नागपुर, चीतरी, सागवाड़ा, भीलूड़ा, इंदौर, भोपाल, जतारा, जबलपुर, दिल्ली, मुंबई, रोहतक, देवलगाँवराजा, अम्बड, जामखेड़, जालना, नासिक, फलटण, सांगली, बाराबंकी, बीड, अडूल, आदि मराठवाड़ा, विदर्भ समेत भारत के सभी प्रांतों, नगरों से सभी भक्त जन अपने चहेते गुरुदेव के दर्शन एवं उन्हें जन्मोत्सव की बधाई देने, उनका चरणाभिषेक करने के लिए उमड पड़े। सुबह ७ बजे से इच्छापूरक श्री आदिनाथ भगवान सहित संघ चैत्यालय का महामस्तकाभिषेक, महाशांतिधारा बाहर से सभी यात्रियों ने बडे भक्ति भाव से किया। विधान के प्रमुख सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य धर्मतीर्थ क्षेत्र के पूर्व अध्यक्ष व मार्गदर्शक श्री सुनील प्रमोद मदनलाल जी काला परिवार ने प्राप्त किया। जलाभिषेक से लेकर सुगंधित कलश तक सभी कलश करने का सौभाग्य सभी भक्तों ने प्राप्त किया। सुबह 9 बजे से सभी संघस्थ शिष्यों ने आचार्य श्री के लिए विनयांजलि प्रस्तुत की। दोपहर एक से तीन बजे तक धर्मतीर्थ क्षेत्र में कचनेर, पैठण, जटवाड़ा, धर्मतीर्थ क्षेत्र सहित औरंगाबाद जैन समाज के सभी पदाधिकारियों सहित अनेक गणमान्य लोगों ने वृक्षारोपण संपन्न किया। वहीं नागपुर में भक्तों ने 5000 वृक्ष लगाकर आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का जन्मोत्सव मनाया। दिन में तीन बजे से प्रारंभ हुआ परोपकार दिवस शाम पांच बजे तक जल्लोष के साथ चलता रहा। अभीष्ट सिद्धि स्तोत्र के साथ आचार्य श्रीसंघ ने ही धर्मसभा का मंगलाचरण किया। सकल जैन समाज, के सभी पदाधिकारियों ने दीप प्रज्वलन किया। महिला मंडल ने पुष्प अर्पित किये। आचार्य श्री के परम भक्त, श्री अरुण पाटनी सहित सभी ने गुरुदेव का 49 द्रव्यों से पादप्रक्षालन किया, आचार्य श्री को पीछी भेंट बाराबंकी से श्री प्रमोद-रेखा श्री संजय, श्री शेखर श्री आनंद जैन परिवार बाराबंकी, कमंडल भेंट महाप्रसादी दाता श्री आर .आर. पहाड़े, मयूर मानस पहाड़े, नंदलाल राजेन्द्र, नीलेश ठोले परिवार औरंगाबाद करने का सौभाग्य, सिद्धांत शास्त्र भेंट निधि अमित जैन रोहतक, सुनिधि अमित जैन हैदराबाद ने किया पूरा सदन आचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव के जयकारों से गूंज उठा। मेरी पाठशाला के बच्चों ने आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव के जीवन पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। औरंगाबाद के सभी जैन मंदिरों के महिला मंडल ने आर्यिकाश्री आस्थाश्री माताजी के मार्गदर्शन में आचार्य श्री की महापूजा की। संघपति श्री नितिन नखाते ने नागपुर चातुर्मास 2006 व 2018 के ऐतिहासिक पलों के अनुभव व्यक्त किए। श्री पार्श्वनाथ खण्डेलवाल दिगंबर जैन पंचायत राजाबाजार के विश्वस्त और धर्मतीर्थ विकास समिति के मार्गदर्शक श्री प्रकाश अजमेरा ने विनयांजलि देते हुए कहा कि -"आचार्य श्री के माध्यम से औरंगाबाद सहित भारत के अनेकों नगरों प्रांतों की जैन समाज को एक से बढ़कर एक उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। गणधर विद्यापीठ, आचार्य श्री गुप्तिनंदी सभागृह, हीराचन्द कस्तूरचंद कासलीवाल प्रांगण, बालाजीनगर जैन मंदिर, अरिहंत नगर, रामनगर, विष्णुनगर, सराफा, हडको, कर्णपुरा, आर्यनंदी कालोनी, चिंतामणि रेजीडेंसी, सेठीनगर आदि सभी जैन मंदिर आचार्य श्री की देन है। उससे अधिक बढकर धर्मतीर्थ भी आचार्य श्री ने औरंगाबाद जिले में खडा किया है। ऐसे अनेक उपकार आचार्य श्री के हम पर हैं। आचार्य श्री मात्र जैनों का ही नहीं वे तो सबका भला सोचते हैं इसलिये दिन रात इच्छापूरक श्री आदिनाथ भगवान के चरणों के निकट बैठकर विश्वकल्याण की निरंतर साधना करते हैं। उनका यह जन्मोत्सव भी परोपकार में समर्पित है।

मंचसंचालन श्री अरुण जी पाटनी ने किया वहीं त्यागी सभा का संचालन आगमस्वरा गणिनी आर्यिकाश्री आस्थाश्री माताजी ने किया। क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी ने कहा आचार्य श्री ने बुढापे में हमारा जीवन संवार दिया। वे एक माता पिता के समान हमेशा हमारा ख्याल रखते हैं। आचार्य श्री की

जन्मदात्री क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी ने कहा आचार्य श्री को जन्म देकर मेरी यह कोख धन्य हो गई है और आचार्य श्री से दीक्षा लेकर उनकी ही शिष्या बनकर मेरा जीवन धन्य हो गया। इसी से मेरा नाम धन्यश्री हो गया। मुनिश्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चंद्रगुप्तजी, मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्त जी, क्षुल्लक श्री धर्मगुप्त जी, क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी ने भी गुरुभक्ति प्रदर्शित की।

आचार्य श्री ने विश्वसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा -- भले ही मेरे जन्मोत्सव के निमित्त मात्र से भी यहाँ जो गरीब अनाथ बच्चों को, और असहाय निराश्रित वृद्धजनों को अन्नदान दिया गया। मात्र औरंगाबाद ही नहीं इसके अलावा नागपुर, बीड, इंदौर, भोपाल, चीतरी में भी अनाथालय, वृद्धाश्रम औषधालय में निःशुल्क दवाईयाँ, भोजन, फल आदि का वितरण किया गया। इतना ही नहीं वृक्षारोपण भी किया गया। यही सच्चा जन्मोत्सव है। ध्यान रखें जीवन में किसी को रुलाकर हवन भी करवाओगे तो कोई फायदा नहीं। और अगर रोज किसी एक आदमी को हँसा भी दिया तो आपको अगरबत्ती जलाने की भी जरूरत नहीं है। परोपकार से बडा कोई धर्म नहीं है। हमारा वर्तमान ही हमारे जीवन का सबसे सुंदर दिन है। आज से बेहतर कुछ भी नहीं है क्योंकि कल कभी आता नहीं, और आज कभी जाता नहीं। यदि आपके चंद मीठे वचनों से अगर किसी का रक्त बढता है तो वह भी बढ़ा रक्त दान है। आपके पीठ थपथपाने से यदि किसी की थकावट दूर होती है तो यह भी बडा श्रमदान है। और यदि आप खाते समय अपनी थाली में उतना ही लें और आपके कारण एक अन्नकण भी व्यर्थ झूठा नहीं जाये तो यह भी अन्नदान है। सरलता, नम्रता साधारण व्यक्ति को भी फरिश्ता बना देती। अपने धन, गुण, प्रतिभा, शक्ति को छिपाकर नहीं रखे उसे विवेक पूर्वक शक्ति अनुसार जनकल्याण में लगा दे। खुद की फिक्र अक्सर तनाव देती है। दूसरों की फिक्र में कुछ करके देखिये बड़ा सुकून मिलेगा। अनाथ बच्चों को गोद ले उन्हें अनाथ होने का आभास भी नहीं हो। सफल और प्रसन्न व्यक्ति वह है जो स्वयं का मूल्यांकन करता है। और दुःखी वह है जो दूसरों के मूल्यांकन से जलता रहता है।

रानी बाग में बरस रही है आध्यात्मिक वर्षा

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' की परंपरा के प्रमुख संत परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज का 16वां मंगल चातुर्मास 2021 राजधानी दिल्ली की धर्मनगरी रानी बाग स्थित श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में धर्मप्रभावना पूर्वक चल रहा है। सारगर्भित मंगल प्रवचन श्रृंखला में भक्तों को सम्बोधित करते हुए पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि आज का जीवन केवल लालच के आधार पर टिका हुआ है। जहाँ कुछ लालच है वहीं हमारा रुझान है। हमारे पास जो है उससे हम संतुष्ट नहीं हैं परन्तु हमें और कुछ भी चाहिए, यही लालच आज मानव जीवन को बर्बाद करने में लगा है। वर्तमान और भविष्य के फासले को मिलाने की पुरजोर ताकत हम लगा देते हैं। लौकिक जीवन में तो लालच की पराकाष्टा देखने को मिलती ही है परन्तु वर्तमान में भगवान को पाने के लिए भी प्रलोभन और लालच की बुनियाद खड़ी करनी पड़ती है।

लालच से भरा हुआ चित अशांत ही रहता है। अशांत चित का भगवान से सम्बन्ध जुड़ ही नहीं सकता। जीवन में हर वस्तु लालच के पीछे भागने से शायद मिल सकती हैं पर भगवत-प्राप्ति के लिए दौड़ना मूर्खता है। दौड़ना उसके लिए पड़ता है जो हमसे भिन्न है परन्तु ईश्वर तो सदैव हमारे साथ है। एक इंच का भी फैसला होता तो हम उसके लिए थोड़ा दौड़ लेते। उसे खोजने कहाँ जायेंगे? जिसे खोया हो उसे ही खोज सकते हैं। जो अपने पास ही हो उसे खोजने निकलेंगे तो हर हाल में भटकेंगे ही। भगवान को पाने के लिए हम नित नयी क्रियाएं करते हैं। पूजा करेंगे, प्रार्थना करेंगे, जप करेंगे, तप करेंगे - ये सब प्रयत्न हैं भगवान को पाने के लिए। परन्तु जो हमारे पास ही है, हमारा ही है, उसे पाना क्या है? **भगवान को पाना नहीं है, उसे तो मात्र जानना है।** एक पल के लिए भी यदि हम अपनी बाहर की यात्रा को विराम दे देंगे तो चित का

आवागमन रुक जायेगा।

भीतर विद्यमान चैतन्य आत्मा ही तो भगवान है। अंतरंग में उतरने के लिए किसी लोभ की, किसी लालच की, किसी दौड़ की, किसी खोज की, किसी उपाय की अथवा किसी प्रयास की आवश्यकता ही नहीं है। उसके लिए मात्र क्रिया-शून्यता चाहिए। सभी प्रकार के प्रयासों को, लोभ, लालच, दौड़, खोज आदि को विराम देकर केवल झांकना है अपने भीतर। जब बाहर की यात्रा रुक जाएगी तो अंदर की यात्रा स्वयं ही क्रियान्वित हो जाएगी। मोक्ष मार्ग पर बढ़ने के लिए सर्वप्रथम सम्यक्दर्शन की प्राप्ति अनिवार्य है। सम्यक्दर्शन के अभाव में सभी मेहनत निष्फल है। आचार्य श्री की ओजस्वी वाणी को श्रवण कर ज्ञानपिपासुजन तृप्त हो रहे हैं। उल्लेखनीय है कि रानी बाग क्षेत्र में प्रथम बार चातुर्मास संपन्न हो रहा है। पूज्य आचार्य श्री के श्रीमुख से प्रतिदिन प्रातः काल सारगर्भित मंगल प्रवचन तथा सायंकाल में श्री रत्नकरण्डक श्रावकाचार ग्रंथराज का मार्मिक विवेचन चल रहा है।

पावापुरी-नालन्दा का पुरातत्त्व

- डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

पावापुरी बिहार के नालन्दा जिला में स्थित है। इसके पावापुर, अपापपुरी, पावा आदि नाम भी हैं। जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का निर्वाण अब से 2547 वर्ष पूर्व इसी पावापुर या पावापुरी से हुआ था। यहां तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण/मोक्ष स्थल 'जलमंदिर' है। कहते हैं महावीर स्वामी के निर्वाण होने पर यहां इतने श्रद्धालु इकट्ठे हुए कि उन्होंने यहां की चुटकी-चुटकी मिट्टी उठाकर कर माथे पर लगाई जिससे यहां तालाब बन गया। जो आज भी है। इसी तालाब के मध्य तीर्थंकर भगवान महावीर का निर्वाण स्मारक है, जिसे जलमंदिर कहते हैं। इस तालाब के किनारे दिगम्बर जैन कोठी मंदिर, पाण्डुकशिला स्थित है और यहां से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर जैन श्वेताम्बर कोठी मंदिर है। पुरातत्त्व की दृष्टि से यहां कोई बड़ा मंदिर नहीं है। किन्तु दिगम्बर जैन कोठी मंदिर में चार पुरातन जैन मूर्तियां हैं जो बहुत ही पुरातात्त्विक महत्व की हैं। यहां के मुख्य मंदिर के दोनों तरफ ताखों में ये दो दो प्रतिमाएं स्थापित हैं, जो कुछ कुछ खंडित होने से पूजी नहीं जाती हैं।

पार्श्वनाथ प्रतिमा भूरा पाषाण-

इस वेदी में दो तरफ दो दो और बीच में एक प्रतिमा पुरानी है। दर्शन के बाएं तरफ ताखे में दो मूर्ति हैं। एक श्याम पाषाण की और एक भूरा पाषाण की। भूरा पाषाण मूर्ति 21 इंच ऊँची और 13.5 इंच चौड़ी है। जटाजूट मुकुट ऊँचा है, केश-उष्णीस मूर्ति के सिर को सप्तफणों से युक्त दर्शाया गया है। ग्रीवा-त्रिवली, कर्ण लम्बित स्कंधों को स्पर्श कर रहे हैं। वक्ष पर श्रीवत्स नहीं है। नाभि ठीक है। हथेलियों और पैर के तलवों में चक्र अंकित है। दोहरे (ऊपर-नीचे पंखुड़ियों युक्त) कमल पर आसनस्थ ध्यानमुद्रा में दर्शाया गया है। परिकर अंकन में प्रतिमा के दोनों तरफ दो चंवरधारी, दाहिने हाथों में एक एक चंवर लिए हुए जो ऊपर हो हैं और वायां हाथ जंघा पर टिकाए आराम मुद्रा में दर्शाये गये अंकित हैं। गगनचारी गंधर्वदेव हाथों में मालाएं लिए पृष्ठभूमि में मेघ अंकित हैं। माल्यधारियों के ऊपर मूर्ति के बाएं तरफ झाँझ-मजीरा और दाएं तरफ ढोल लिए हाथ दुंदुभि वादक उकरित हैं। प्रतिमा के ऊपर छत्र-त्रय उकरित है। सिंहासन के सिंह नहीं है। यक्ष-यक्षी के स्थान खण्डित हैं। इस प्रतिमा के परिकर का बाहरी किनारा कलायुक्त है।

पावापुर दि.जैन कोठी मंदिर भूरा पाषाण पार्श्वनाथ स्वामी

पावापुर दि.जैन कोठी मंदिर श्याम पाषाण पार्श्वनाथ स्वामी

पावापुर दि.जैन कोठी मंदिर चतुर्विंशतिजिन पट्ट –2

पार्श्वनाथ प्रतिमा श्याम पाषाण-

दूसरी भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा 15.5 इंच ऊँची और 11 इंच चौड़ी है। यह श्याम पाषाण में पद्मासन प्रतिमा है। इसमें सप्त-फणाच्छादन होने से यह पार्श्वनाथ भगवान की निर्णीत है। दोनों पार्श्वों में दाहिने हाथों में चंवर लिए चंवरधारी, उनसे ऊपर माल्यधारी, उनसे ऊपर दुंदुभिवाद्य दर्शाये गये उत्कीर्णित हैं। सबसे ऊपर बीच में छत्र-त्रय उकरित है। प्रतिमा दोहरे कमल पर आसीन है। कमल के नीचे पादपीठ है जो महत्व का है। पादपीठ पर दोनों ओर दो दो भक्त (संभवतः युगल) अंकित हैं। बीच में चक्र, चक्र के दोनों ओर संभवतः अनुकूलाभिमुख सिंह या मृग (पूर्णतः स्पष्ट नहीं हैं) अंकित हैं। पादपीठ पर बायीं ओर के चवंरधारी के बाद खड़ी हुई एक प्रहरी जैसी आकृति अंकित है। किसी प्रतिमा पर लेख स्पष्ट नहीं है इस कारण समय अज्ञात है, किन्तु चक्रयुक्त प्रतिमा मथुरा की 5वीं सदी के लगभग की प्रतिमाओं से साम्य रखती है।

चौबीस तीर्थंकर सपरिकर प्रतिमा पट्ट

दर्शक के बाएं ओर वेदी के दाहिने ही ताखे में दूसरी काले पाषाण की 21.5 इंच ऊँची 11 इंच चौड़ी चैबीसी प्रतिमा है। इस शिलाफलक में परिकर रहित मूलनायक 6 बाई 5.5 इंच की प्रतिमा है। शेष परिकर में बनी पद्मासन प्रतिमांए दो-दो इंची की हैं। मूल नायक के अतिरिक्त ग्यारह बांएं और इतनी ही दांयें ओर प्रतिमाएं हैं, एक सबसे ऊपर और एक मूलनायक, इस तरह एक फलक में चौबीस तीर्थंकर प्रतिमाएं अंकित हैं। मूलनायक के बगल में एक एक पद्मासन तीर्थंकर प्रतिमा के नीचे चंवरधारी ऐसे अंकित हैं मानों दूर से देखने पर खड्गासन तीर्थंकर हों, क्योंकि इनके दोनों हाथ नीचे की ओर हैं और समपादासन में हैं, जबकि प्रायः चंवरी पर एक पैर टेके हुए दर्शाए जाते हैं। हो सकता है ये ऋषभनाथ के भरत-बाहुबली दोनों पुत्र अंकित हों।

मूलनायक की मुखाकृति खुरची हुए प्रतीत होती है। मूलनायक के सिर की पृष्ठभूमि में किसी बड़े पत्रों वाले वृक्ष की शाखाएं अंकित हैं, जो तीर्थंकर का केवलज्ञान वृक्ष कहलाता है। मूर्ति के वक्ष में बड़ा सा श्रीवत्स चिह्न अंकित है। कमलासन के स्थान पर ऊँची सी पादपीठ ही है जिस पर एक पंक्ति का एक लेख है, किन्तु खंडित होने से अवाच्य है। सिंहासन के स्थान पर विपरीताभिमुख दो वृषभ हैं। वृषभों के बीच में एक आयुध युक्त यक्ष बना है। दोनों वृषभों के बाद किनारों पर सेवकों के नीचे विपरीताभिमुख एक एक गज-हाथी अंकित है। मूलनायक के सिर के ऊपर एक बड़ा छत्र है, उसके ऊपर एक आकृति है जो अपना बायां पैर और दाहिना घुटना टेक कर बैठा है। दोनों में सामने को एक लम्बा और मोटा दण्ड सा सम्हाले है जो बड़ी बांसुरी सी प्रतीत होती है। इस आकृति के दोनों ओर लगभग मूलनायक के बराबर ऊँचाई के एकएक हाथी जो पिछले दोनों पैर मोड़े हुए अगले पैरों पर खड़े सूंड़ में कुछ लिए ऊपर को किये हुए दर्शाने गये हैं, हाथियों पर एक एक इन्द्र आरूढ़ उत्कीर्णित है। लगभग इसी तरह का एक और चतुर्विंशति तीर्थंकर पट्ट है। इसमें अधिक वैषम्य नहीं है।

एक तीर्थंकर प्रतिमा

यहां की मुख्य वेदी पर एक और छोटी सी (8×6 इंच की) पाषाण की प्राचीन तीर्थंकर प्रतिमा है। परिकर कलायुक्त है। दोहरे कमल पर पद्मासनस्थ तीर्थंकर के वक्ष पर तिकोन श्रीवत्स बना है। दोनों ओर चंवरधारी, ऊपर छत्र अंकित है। माल्यधारी नहीं हैं। पादपीठ पर बीच में नौ आरा का धर्मचक्र है, चक्र के दोनों ओर चक्राभिमुख दो सूकर जैसे चिह्न हैं। इनके लम्बे मुंह और बड़े कान हैं। यदि ये सूकर हैं तो तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ भगवान की प्रतिमा निर्णीत होती है।

इस तरह पावापुरी के इस दिगम्बर जैन कोठी मंदिर में पुरातत्त्व की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण पांच प्रतिमाएं स्थापित हैं। ये प्रतिमाएं मथुरा जैसे धर्मचक्रांकन से 5वीं से 8वीं शती की प्रतीत होती हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री हेमंतकुमार नेमीचंदजी समैया
सागर

इजि. संतोषकुमार कोलमचंद जैन
जबलपुर

श्री राकेशकुमार पवनकुमार गोदरे
सागर

श्री राजेश राजकुमार सिंघई
सागर

श्री आमितकुमार ज्ञानचंद जैन(चौधरी)
सागर

श्री शैलेशकुमार शिलचंद जैन
सागर

श्री अभयकुमार घनशामप्रसाद जैन
सागर

श्री सुनीलकुमार अनंतकुमार जैनघुवारा
(छतरपुर)

श्री विपिनकुमार विनोदकुमार जैन
सागर

श्री राजेश नरेन्द्रकुमार जैन
जबलपुर

श्री जयकुमार रेमशचंद जैन
दमोह

श्री पंडीत अखिलेश रविचंद्र जैन
दमोह (म.प्र.)

श्री आशिष ज्ञानचंद जैन
दमोह (म.प्र.)

डॉ. सुधीर बाबुलाल जैन (वैद्य)
दमोह (म.प्र.)

श्री राकेशकुमार खुशालचंद जैन (पुजारी)
दमोह (म.प्र.)

श्री अजितकुमार शिखरचंद जैन (सिंघई)
दमोह (म.प्र.)

श्री राकेशकुमार त्रिलोकचंद जैन
कोटा (राज.)

श्री विनोदकुमार मुलचंद जैन
कोटा (राज.)

श्री कमलेश कुमार छितरमल जैन
कोटा (राज.)

श्री वीरेन्द्र विजेन्द्र कुमार जैन
कोटा (राज.)

श्री संजय विरेन्द्रकुमार जैन, कटनी
प्रति:दैनिक जागरण पारसनाथ ट्रांसपोर्ट

श्री बिनोदकुमार प्रकाशचंद जैन
बोकारो (झारखण्ड)

श्री शेखरचंद ब्रीद्धीचंद जैन
बोकारो (झारखण्ड)

श्री पंकज रतनलाल जैन
बोकारो (झारखण्ड)

श्री दिलीपकुमार मांगीलाल जैन
बोकारो (झारखण्ड)

आजीवन सदस्य

श्री पंकजकुमार राजकुमार जैन
बोकारो (झार)

श्री हर्शिल धर्मेन्द्र शेठ
खुरई.सागर म.प्र.

श्री प्रशांत राजकुमार जैनगुरहा
खुरई.सागर म.प्र.

श्री अरुणकुमार बालाप्रसदजी चौधरी
खुरई. सागर म.प्र,

श्री प्रसन्नकुमर ताराचंदजी जैन (रोडावाले)
खुरई. सागर म.प्र,

श्री राजमल छोटेलाल जैन
खुरई,सागर,म,प्र,

श्री अंकुर अरविन्द सराफ जैन
खुरई. सागर म.प्र.

श्रीमती सुनीता रिषभकुमार जैन
खुरई. सागर म.प्र.

श्रीमती शशि नेंरद्रकुमार चौधरी
खुरई. सागर म.प्र.

श्रीमती अर्चना अनिलकुमार सेठी
खुरई. सागर म.प्र.

श्री विजयकुमार भैयालालजी गुरहा
खुरई,सागर म,प्र.

श्री रजनेशकुमार बाबूलाल जैन
खुरई,सागर म,प्र.

श्री रमेशकुमार कुंदनलालजी जैन
खुरई,सागर म,प्र.

श्री आनंदकुमार बी,एल जैन
खुरई,सागर म,प्र.

श्री कैलाशचंदजी एच,एल,जैन
भोपाल,म,प्र,

श्री नरेन्द्रकुमार राजारामजी जैन
इंदौर म,प्र,

श्री सुधीर उत्तमचंद जैन
भोपाल म,प्र,

श्री देवेन्द्रकुमार के. शाह
भोपाल म,प्र,

श्री प्रसन्नकुमार चम्पालालजी जैन
ललितपुर (उ.प्र,)

श्री ऋषभ सोहागमलजी जैन
भोपाल म.प्र.

श्रीमती कल्पना जैन गोहिल एडवोकेट
भोपाल म.प्र.

श्री देवेन्द्रकुमार शिखरचंद जैन
भोपाल म.प्र.

श्रीमती चंदा सतीश जैन
विदिशा म,प्र,

श्री कंछेदीलाल घासीराम जैन
विदिशा म,प्र

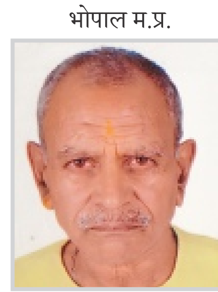
श्री सनतकुमार कमलचंदजी जैन
विदिशा म,प्र